मानवता में व्यावहारिक अनुसंधान के उपरांत प्रस्तुत शोध प्रबन्ध

अनुसंधान का विषय **यज्ञ द्वारा रोगोपचार संभव और मानवता**

शोधार्थी का नाम– डॉ0 विनीत विद्यार्थी

पंजीयन संख्या–HR/369/71 दिनॉक– 4 नवम्वर 2024

शोघार्थी का पता– डॉ0 विनीत विद्याार्थी दर्शनशास्त्री गायत्री शक्तिपीठ ग्राम गंज पुरैना रोड ऑवला बरेली उ0प्र0 भारत पिन–243301

शोध पर्यवेक्षक– डॉ0 रामजीमल शिक्षाविद्

दिव्य प्रेरक कहानियॉ मानवता अनुसंधान केन्द्र

DIVYA PRERAK KAHANIYAN HUMANITY RESEARCH CENTRE

Regd. Under Indian Trust Act 1882, Government of India

पंजीकृत कार्यालय–ठेकमा, जिला– आजमगढ, उत्तर प्रदेश (भारत)

शोधार्थी का धोषणा पत्र

मैं डॉ विनीत विद्याार्थी शोधार्थी दिव्य प्रेरक कहानियॉ मानवता अनुसंधान केन्द्र यह धोषणा करता हॅू कि प्रस्तुत शोध प्रबन्ध यज्ञ द्धारा रोगोपचार संभव और मानवता जो व्यवहारिक अनुसंधान का मूल भाग है तथा अप्रकाशित है। इस शोध प्रबन्ध को **डॉ0 रामजीमल शिक्षाविद्** के मार्ग दर्शन में पूरा किया गया है।

मैं यह धोषणा करता हॅू कि इस शोध कार्य में किसी प्रकार साहित्यिक चोरी नही की गई है तथा इससें पहले किसी अन्य डिग्री डिप्लोमा के लिए उपयोग नही किया गया है। यह भी प्रमाणित करता हॅू कि अपना अनुसंधान कार्य दिव्य प्रेरक कहानियॉ मानवता अनुसंधान केन्द्र द्धारा प्रतिपादित सभी निर्देशों के अनुसार किया है।

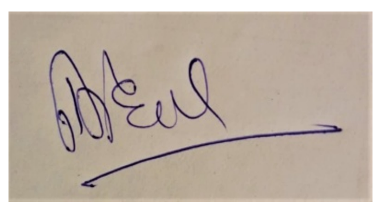

दिनॉक– 4 नवम्वर 2024

शोधार्थी के हस्ताक्षर

पर्यवेक्षक का धोषणा पत्र

प्रमाणित किया जाता है कि दिव्य प्रेरक कहानियॉ मानवता अनुसंधान केन्द्र के अन्तर्गत यज्ञ द्धारा रोगोपचार संभव और मानवता विषय पर शोधार्थी डॉ0 विनीत विद्यार्थी द्धारा किया गया है प्रस्तुत अनुसंधान मूल व अप्रकाशित भाग है । इनके द्धारा मेरे निर्देशन में यह शोध कार्य किया गया है एवं शोध प्रबंध साहित्यिक चोरी रहित बहुत ही उत्कृष्ट है तथा शोध प्रकाशन के लिए उपयुक्त है।

वर्तमान में यह व्यवहारिक अनुसंधान कार्य समाज में सामाजिक समरसता आपसी सहयोग प्रेम परोपकार नैतिकता एकता मानवता और सौहार्दपूर्ण वातावरण वनानें में अति महत्वपूर्ण सिद्ध होगा। इस तरह का धार्मिक आध्यात्मिक अनुसंधान कार्य करना अनुसंधान कर्ता की कार्य कुशलता व सच्ची मानवता के प्रति समर्पण को दर्शाता है।

यह भी प्रमाणित किया जाता है कि शोधार्थी ने अपना अनुसंधान कार्य दिव्य प्रेरक कहानियॉ मानवता अनुसंधान केन्द्र द्धारा प्रतिपादित सभी नियमों व निर्देशों के अनुसार किया है।

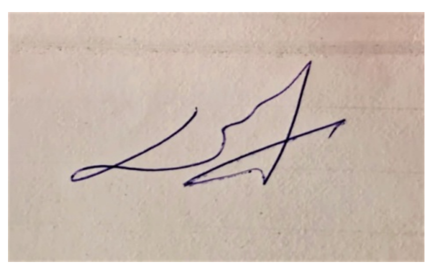

दिनॉक–4 नवम्वर 2024

पर्यवेक्षक के हस्ताक्षर

भूमिका

यज्ञ द्वारा रोगोपचार संभव और मानवता

विषयक शोध प्रबंध दिव्य प्रेरक कहानियॉ मानवता रिसर्च सेन्टर आजमगढ के परम आदरणीय डॉ0 अभिषेक कुमार व डॉ0 प्रो0 ए0के0 जैन डॉ0 **रामजीमल शिक्षाविद** के निर्देशन में करनें का अवसर प्राप्त हुआ और लगभग एक वर्ष के कठोर परिश्रम के बाद मै इस शोध प्रबंध को समर्पित करतें हुए हर्षित एवं आशान्वित हॅू कि चयन मण्डल को स्वीकार्य होगा।

लगभग 24 वर्षो में मैंने अनेको लोगों पर यज्ञोपचार का प्रयोग किया है जो सफल रहा है। इस बीच गायत्री जीवन का आधार एवं रागोपचार; यज्ञेन; पापैबहुभिर्विमुक्तः' गायत्री तत्व दर्शन; तंत्र मंत्र यंत्र का इतिहास एवं उसकी उपादेयता;फलित ज्योतिष एवं ग्रह–शमन जैसी पुस्तकें लिखी गयी; परन्तु यज्ञोपैथी को लिखनें का हेतु न बन सका। मार्च 2020 में चीन द्वारा फैलायें कोरोना बाइरस के कारण भारत मे लाकडाउन हुआ। यह समय लोगों को सजा का रहा होगा परन्तु गुरुदेव की प्रेरणा हुई– यज्ञोपैथी पुस्तक को लिखनें की। इस कारण मुझे यह समय वरदान सिद्ध हुआ। यज्ञोपैथी के अनुभव हमारें इस शोध में बहुत सहयोगी रहें हैं।

मै परम आदरणीय डॉ0 अभिषेक कुमार व डॉ0 प्रो0 ए0के0 जैन डॉ0 **रामजीमल शिक्षाविद** जी का विशेष आभार व्यक्त करता हॅू जिनका पूर्ण सहयोग समर्थन रहा है आपके साथ कार्य करके मुझे अपार सुख की अनुभूति एवं ज्ञान की प्राप्ति हुई है। साथ ही उन सभी का जिनका आभार व्यक्त करता हॅू जिनका प्रत्यक्ष–अप्रत्यक्ष सहयोग रहा है।

डॉ. विनीत विद्यार्थी दर्शनशास्त्री,

निदेशक गायत्री शक्तिपीठ धाम गंज,

ढाल आंवला बरेली ;उ.प्र0 सम्पर्क सूत्र 9837532308/9045332308

विषय–सूची

1–अनुसंधान विषय वस्तु की भूत भविष्य वर्तमान परिपेक्ष्य में व्याख्या

2–अनुसंधान की आवश्यकता

3–शोध प्रबन्ध के मुख्य धटक

क–यज्ञः सम्पूर्ण विवेचन

ख–यज्ञोपचार

ग– प्रयोग–परीक्षण

4–साक्ष्य स्रोत परिणाम निष्कर्ष

4–सदर्भ व्याख्या

5–साक्ष्य स्रोत

6– तार्किक विश्लेषण

7– शोध–सार मानवता से ओत–प्रोत

8– स्वाभिमत

9– भाषा शैली

10–संदर्भ ग्रन्थ सूची

प्रस्तावना–

यज्ञ और मानवता दोनों एक–दूसरें के पूरक हैं और दोनों का क्षेत्र व्यापक है। यज्ञ परमार्थिक कार्य है जो व्यक्ति को सुख समृद्धि आनन्द आरोग्य प्रदान करता है वहीं मानवता करनें वाला एवं मानवता से लाभान्वित दोनों को परम सुख प्राप्त होता है। मानवता का गुण व्यक्ति का आभूषण है इसके अभाव में मानव पाषाण सम है जिसमें न भाव है और न भावना। संतों साधको ऋर्षियों एवं लोक परमार्थ कार्य में लगें मानवों की पहचान मानवता के कारण ही है। यदि कोई व्यक्ति बहुत ज्ञानी है शिक्षित है परन्तु वह व्यवहार जगत में मानवता शून्य है तो उसें सम्मानीय नही माना जा सकता है वही एक ऐसा व्यक्ति जो शिक्षा विहीन है परन्तु सेवा भावी है सवका हित चाहता है मानवता के पथ पर अग्रसर है वह सवका प्रिय हो जाता है क्योंकि उसकी कथनी–करनी एक है वह परमार्थ को पूजा समझ कर करता है।

मानवता को परिभाषित नही किया जा सकता है क्योंकि इसका क्षेत्र बहुत व्यापक है कोई निश्चित दायरा नही है परन्तु सभी परमार्थिक सेवा सहयोगी कल्याणकारी कार्य जिनसे मानव ही नही वरन् जन्तु तंन्तु विश्व प्रकृति का हित होता है वे मानवता के दायरें में आतें हैं।

मानवता मानवीय गुण है परन्तु मानव के साथ साथ जीवों में भी पाया जाता है अधिकांश जीव अन्य जीवों पर दया करतें है और उनके बच्चों का पोषण भी करतें हैं गाय को कुत्तें विल्ली के बच्चों को दूध पिलाते देखा गया है। इसी प्रकार से शेरनी को बकरी के बच्चें पर दया करनें का भी प्रमाण सामनें आया है परन्तु सभी जीव–जन्तु समान नही होतें हैं जैसे मानवों में अलग–अलग प्रकृति के लोग पायें जातें है वैसे ही कुछ जीव–जन्तु भी दया–मानवता का गुण रखतें हैं। सत्यता यह है कि एक धार्मिक व्यक्ति में मानवता का गुण अधिक पाया जाता है अथवा धर्मिक आध्यात्मिक वातावरण में रहनें वालें व्यक्ति ही नही वरन् जीव–जन्तु भी मानवता के गुण को ग्रहण कर लेतें हैं। यह वातावरण का प्रभाव है जहॉ सकारात्मक प्रभाव पढता है।

सभी धर्मो में मानवता को श्रेष्ट बताया गया है और मानवता के निमित्त बहुत से मानदण्ड निर्धारित कियें गयेह हैं सनातन संस्कृति में मानवता को दया करूणा प्रेम सेवा संवेदना से जोडकर देखा जाता है वहीं जैन बौद्ध और ईसाई सम्प्रदाय के अनुयायी दया करूणा के भाव को मानवता ही मानतें हैं। इस्लाम धर्म में आपसी तालमेल सहयोग को मानवता माना गया है। पारसी यहूदी सम्प्रदाय के लोग सेवा को मानवता मानकर धर्म पूर्ण व्यवहार करतें है। एक बात अटुट सत्य है कि सभी धर्मो का आधार मानवता ही है। जहॉ मानवता नही है वहॉ अनाचार अत्याचार और असमानता का वातावरण व्याप्त है।

अनुसंधान विषय वस्तु की भूत भविष्य वर्तमान परिपेक्ष्य में व्याख्या

वर्तमान समय में मानव व समाज के सन्मुख अंसंख्य समस्याऐं हैं। जिनके फलस्वरूप समाज में और मानव में अशान्ति असंतुष्टि अवराध की प्रवृत्ति बड रही हैं। इस कारण मानवता को खतरा उत्पन्न हो गया है। आज व्यक्ति किसी व्यक्ति की दुर्धटना होनें अथवा किसी जीव–जन्तु के प्राण संकट में होनें पर बीडियों तो बनाता रहता है परन्तु उसें बचाता है नही। कभी कभी जीव के प्राण मानव की संवेदना हीनता के कारण निकल जातें हैं जबकि उसें थोडें से साहस के बाद बचाया जा सकता था। मैं समाज में देखता हॅू कि शरीर में रोग बढ जानें पर डाक्टर भी रोगी को और बीमार बनाकर लूटता रहता रहता है जिस डाक्टर को लोग भगवान मानतें हैं आज वह निर्दयी होता जा रहा है। सेवा के स्थान पर धनार्जन करना ही उसका उद्‌देश्य बन गया है। अधिकाश मरीजों को थोडें से उपचार से ही ठीक किया जा सकता है परन्तु अनेकों चैक अप के नाम पर ठगी का खेल चल रहा है। कभी कभी गलत रिर्पोट के आधार पर इलाज करके मरीज को गम्भीर रोगी बनाकर उसे असमय मार दिया जाता है। अधिकाश महिलाओं की डिलीवरी के केश में व्यर्थ आपरेशन करके सन्तान उत्पन्न करनें का धंधा चल रहा है। इससें समस्या तो बडती ही है परन्तु व्यर्थ का कष्ट एवं धन की गर्गादी भी मरीज को झेलनी होती है। जहॉ रोग का निवारण सहानुभूति प्रेम करूणा के आधार पर किया जा सकता है जहॉ रोग को और बडाना असमय बीमार को और अधिक बीमार बनाकर उसका शोषण करना उसे धन के बर्बाद कर ऋण की स्थिति में पहॅुचाना मानवीय गुणों का अभाव ही कहा जायेगा। इसी अभाव का नाम–मानवता

का ह्रास है। इसलिए मुझे इस विषय पर इस शोध की आवश्यकता अनुभव होती है कि किस प्रकार से मानवता को और अधिक विकसित किया जा सकता है। सबसे अधिक मानवता रोगी के साथ ही की जा सकती है।

मानवता के सिद्धान्त के चार आदर्श हैं– मानवता आध्यात्मिकता का एक पहलु है अंग है जिसके विना मानव कल्याण सभव नही है और अध्यात्म के बिना संस्कृति की कल्पना करना असभव है। इसका समस्त कलेवर ही अध्यात्म से ओत प्रोत है इसलिए सम्पूर्ण विश्व ही इसे आध्यात्मिक ज्ञान के पालनें के रूप में पहचानता आया है। सर्वोच्य ज्ञान प्राप्ति हमारी संस्कृति का महान आदर्श है और ज्ञान का स्वरूप पूर्णतः आध्यात्मिक है जो मानवीय आत्मा के धरातल पर ही प्रस्फुटित होता है। इस परम आदर्श को जाननें और जीनें की दो भिन्न धाराएँ समान और संयुक्त रूप से हमारी सांस्कृतिक यात्रा का नेतृत्व करती आ रही हैं। एक धारा ज्ञान की और दूसरी विज्ञान की। ज्ञान को समझने के लिए विभिन्न शास्त्रों और विद्याओं का निर्माण किया गया है और उनकी श्रेष्ठतम व्याख्या–विवेचना की परम्पराएँ विकसित की गई है। दूसरी धारा विज्ञान की है जिसमें उप प्राप्य ज्ञान को जीनें की कला और सुसंगत जीवन पद्धति के विविध आयामों को धर्म कर्म संस्कार एवं परम्पराओं के रूप में स्थापित किया जाता रहा है।

ज्ञान और विज्ञान–दोनो धाराएँ अन्योन्याश्रित शाश्वत और चिर नूतनता के साथ हमारी सभ्यता संस्कृति व समाज की एश्वर्यता वैभव प्रखरता और श्रेष्ठता की परिचायक है। अध्यात्म तत्व की ये दोनों विमल धाराएँ विभिन्न मार्गो से बहतें हुए भारत भूमि ही नही वरन् समस्त विश्व–वसुधा को जीवन की उर्वरता प्रदान कर मानवता को पोषित करती आ रही हैं।

भारतीय संस्कृति में जीवन पद्धति का निर्माण जिन आदर्शो और मूल्यों को आधार बनाकर किया गया है उस पर चलने बालों को जीवन का परम लक्ष्य मिलना सुनिश्चित है। इसका प्रत्यक्ष उदाहरण भारतभूमि के आद्यतन इतिहास में महापुरूषों एवं महामानवों व महान व्यक्तियों का जीवन दर्शन है जिन्होंनें हर युग में स्वयं को आदर्श बनाकर विश्व मानवता का मार्गदर्शन किया है।

भारतीय संस्कृति के पोषण के लिए हमारे ऋषियों ने जिस जीवन पद्धति का निर्माण किया है वह आध्यात्मिक जीवन दृष्टि पर आधृत एवं सम्पूर्ण जीवन विज्ञान है।

शास्त्रों में मनुष्य के चतुर्वर्ग पुरूषार्थ वर्णाश्रम धर्म–कर्म कर्तव्य आदि की विशद् व्याख्याओं में अध्यात्म विज्ञान की ही प्रस्तुति है।

हमारी संस्कृति का सर्वस्य एक श्रेष्ठम् और सर्वोत्कृष्ट सम्पूर्ण जीवन विज्ञान का पर्याय है। भारत भूमि के अध्यात्मवादी जीवन में शास्त्रों के रूप में मानवीय जीवन का शिखर मौजूद है और संस्कृति के रूप में मानवीय विज्ञान की व्यापकता भी विद्यमान है। यह एक सार्वभौम सत्य है कि यहॉ के शास्त्र और संस्कृति की आवश्यकता समस्त मानवता के लिए वरेण्यं है।

अनुसंधान की आवश्यकता–

सारा संसार जीवन के जिस स्थायी सुख और आनन्द को पागलों की तरह खोजतें भटकतें रहा है उसें हमारें ऋषियों ने आदि काल में ही खोजकर ब्राह्मी स्थिति मोक्ष निर्वाण आदि नाना रूपों में प्रस्तुत कर दिया है तो फिर स्वाभाविक प्रश्न उठता है कि जब जीवन में गूढतम रहस्य और शाश्वत सुख के स्रोत को ऋषियों द्वारो खोजकर पहलें ही किया जा चुका है तो अब दुनिया के खोजने लायक शेष क्या रह जाता है इसका उत्तर यह है कि जो खोजा जा चुका है और जिसकी सभी को आवश्यकता है उस तक पहुॅचनें के मार्ग की खोज करना। किसी एक अथवा दो के हितार्थ नही अपितु सम्पूर्ण मानव एव जीव जगत के लिए–जिस पर चलकर शाश्वत सुख परम शान्ति और संतुष्टि का लक्ष्य प्राप्त हो सके।

दुनिया के स्थायी सुख शान्ति और आनन्द की इच्छा को तो मन में जीवान्त बनाए रखना है परन्तु इसकी प्राप्ति करा सकनें वाला मार्ग खोज निकालनें में असफल हो रही है। भैतिकवाद भोगवाद और वैज्ञानिक क्र्यान्ति के साधन–संसाधनों के उच्चतम विकास के भी अतंर्गन में दबी इच्छा एवं भावना को कोई सार्थक लाभ नही पहुॅचाया है बल्कि इसके उलट अशान्ति असंतुष्टि निराशा और अनेक दुखदायी स्थितियों कों उत्पन्न कर डाला है। जीवन में सुख–शान्ति और आनन्द की तलाश यथावत बनी हुई है। समस्त मानवता इसके लिए लालायित नजर आती है परन्तु उसके पास एंसा कोई मार्ग नही है जिस पर चलकर दच्छित लक्ष्या प्राप्त कर सकें। इस संदर्भ में समस्त संसार को यह बताना आवश्यक है कि जिस मार्ग की तलाश की जा रही है वह मार्ग हमारी ऋषि संस्कृति और जीवन पद्धति में पहलें से विद्यमान है।

इसका अनुसरण कर संसार का प्रत्येक व्यक्ति अपनें जीवन में चिरस्थायी सुख आनन्द और संतुष्टि को प्राप्त कर सकता है।

प्रस्तुत विषय में शोध की आवश्यकता का मुख्य कारण धर्म अध्यात्म और संस्कृति के प्रति लोगों की बढती अरूचि है। वर्तमान समय में लोग भोगवाद में विश्वास करतें है पाश्चात्य संस्कृति के कारण सनातन एवं बैदिक संस्कृति व मूल्यों में गिरावट आयी है जिस कारण मानवता प्रभावित हुई है। नारी बृद्ध जीव–जन्तु के प्रति लोगों का दृष्टिकोण बदलता जा रहा है इन्हें भोग की वस्तु मात्र ही समझा जाता है इसलिए इन पर अत्याचार बढें हैं। बलात्कार जैसी धटनाऍ आम हो गई हैं। जव तक मानव मन में धर्म के प्रति आस्था सम्मान नही होगा साधना उपासना आराधना को अपनें जीवन का अंग नही बना लेता तव तक वह सद्‌गुणों से बंचित ही रहेगा। धर्म एवं यज्ञीय परम्परा ही वह साधन है जिसके द्धारा मानवता को विकसित एवं पोषित किया जा सकता है। यज्ञ का अर्थ परोपकार है और परोपकार ही मानवता है। धर्म शिक्षण है तो मानवता उसकी प्रयोगशाला है। दोनों एक–दूसरें के बिना अधूरें ही हैं। आवश्यकता है आधुनिक समय में मानव को नूतन एवं पुरातन संस्कृति के समन्वय से जोड कर एक नई दिशा प्रदान की जायें जहॉ धर्म के कलेवर में आधुनिक युग के श्रेष्ठ साधनों को जोडकर मानव को और अधिक सबल बनाया जाये। मीडिया का सही उपयोग क्या हो सकता है और अच्छी विचारधारा कैसे जन जन तक पहुंचकर युवा पीडी को भटकनें से रोक सकती है उन्हें एक श्रेष्ठ नागरिक बना सकती है इस शोध का यही उद्‌देश्य रहा है। वर्तमान समय में आज का युवा अधिकांश समय मोवाइल चलानें में व्यतीत करता है रील बनाकर समय खराव करता है अपनी प्रतिभा को नष्ट करता है और गन्दी गन्दी फिल्में देखकर गलत दिशा में चला जाता है। आज युवा शक्ति भटकती जा रही है और अपनें तेज और ओज को अपनें ही हाथों नष्ट कर रही है। निस्तेज युवा देश को कमजोर करतें है और मानवता विहीन युवा संस्कृति व सभ्यता को नष्ट करतें हैं। इसलिए अभी समय है जव जागकर–जगाकर एक नयें भारत का निर्माण कर सकतें हैं अन्यथा पाश्चात्य संस्कृति के प्रभाव से मानवता खतरें में है। प्रस्तुत शोध में इन्ही तत्वों पर विचार कर यज्ञ और यज्ञ द्धारा समस्त रोगो व शोक के निदान पर हल प्रस्तुत किया गया है।

शोध प्रबन्ध के मुख्य धटक

यज्ञः सम्पूर्ण विवेचन

1–यज्ञ का अर्थ एवं उसकी व्यापकता–

भारतीय संस्कृति में यज्ञ का व्यापक अर्थ है; यज्ञ मात्र अग्निहोत्र को ही नही कहतें हैं वरन् परमार्थ परायण कार्य ही यज्ञ हैं। यज्ञ स्वयं के लिए नही किया जाता है बल्कि सम्पूर्ण विश्व के कल्याण के लिए किया जाता है।

यज्ञ का प्रचलन वैदिक युग से है; वेदों में यज्ञ की विस्तार से चर्चा की गयी है; प्राचीन ऋषि नित्य यज्ञ किया करते थे;वे देवताओं को यज्ञ का भाग देकर उन्हें पुष्ट करते थे; जिससें देवता प्रसन्न होकर धन; वैभव; आनन्द की वर्षा करतें थे। वेदों में यज्ञ के वारें में स्पष्ट कहा है कि यज्ञ से विश्व का कल्याण होता है यज्ञ किसी एक के लिए नही किया जाता है।

हारीत ग्रन्थ में कहा है–

यज्ञेन पापैः बहुभिर्विमुक्तः प्राप्नोति लोकान् परमस्य; विष्णो।

अर्थात–यज्ञ से अनेक पापों से छुटकारा मिलता है; तथा परमात्मा के लोक की भी प्राप्ति होती है।

मत्स्य पुराण के 93/117 बल्ली में कहा है–

पुत्रार्थी लभते पुत्रान धनार्थी लभते धनम्।

भार्यार्थी शोभानां भार्या कुमारी च शुभम् पतिम्।।

भ्रष्टराज्यस्तथा राज्य श्री कामः श्रियमाप्नुयात्।

यं यं प्रार्थयेत् कामः सर्वे भवति पुष्कल।।

निष्कामः कुरुते यज्ञ स परब्रह्म गच्छति।

अर्थात–यज्ञ से पुत्रार्थी को पुत्र लाभ; धनार्थी को धन लाभ; विवाहार्थी को सुन्दर भार्या; कुमारी को सुन्दर पति; श्री कामना वालें को ऐश्वर्य ॅप्राप्त होता है और निष्काम भाव से यज्ञानुष्ठान से परमात्मा की प्राप्ति होती है।

कोटि–कोटि पद्धति में कहा है–

न तस्य ग्रह पीडा स्यान्नच बन्धु धनक्षयः।

ग्रह यज्ञ व्रतगेहे लिखित यन्त्र तिष्ठति।।

न तत्र पीडा पापानां न रोगो न च बन्धनम्।

अषेषा यज्ञ फलदमषेषाधौध नाशनम्।।

अर्थात–यज्ञ करनें वाले को पीडा; बन्धु नाश; धन; क्षय; पाप; रोग; बन्धन आदि की पीडा नही सहनी पडती। यज्ञ का फल अनन्त है।

महाभारत में भी कहा है–

देवा सन्तोषिता यज्ञोलोकान् सम्बर्धयन्त्युत।

उभयोर्लोकयोः देव भूतियज्ञ प्रदृष्यते।।

तस्याद्यद्देज्ञावं याति पूर्वजः सहमोदते।

नास्ति यज्ञ समंदानं नास्ति यज्ञ समोविधिः।

सर्व धर्म सुमुदेव्यो देवि यज्ञ समाहितः।।

अर्थात–यज्ञ से सन्तुष्ट होकर देवता संसार का कल्याण करतें हैं; यज्ञ द्वारा लोक–परलोक का सुख प्राप्त सकता है। यज्ञ से स्वर्ग की प्राप्ति होती है। यज्ञ के समान कोई दान नही है; यज्ञ के समान कोई विधि–विधान नही; यज्ञ में ही सब धर्मो का उद्देश्य समाया हुआ है।

महाभारत में ही लिखा है–

असुराषय सुराष्चैव पुष्यहेतोर्मख क्रियाम्।

प्रयतन्ते महात्मानस्तस्तमद्यः परायणाम्।।

यज्ञैरेव महात्मानो ववुभुराधिका सुराः ।

अर्थात–असुर और सुर सभी पुष्प हेतु यज्ञ के लिए प्रयत्न करतें हैं।सत्पुरुषों को सदा यज्ञ परायण होना चाहिए। यज्ञों से बहुत से सत्पुरुष देवता बने हैं।

यजुर्वेद के 12/28वें मन्त्र कहा है–

त्वामग्ने यजमानाऽनुद्यन विष्वावसु दधिरे वार्याणि त्वया सह द्रविणमिच्छमाना व्रजं गोमैत मुषिंजो विवब्रुः।

अर्थात–हे देव अग्ने ! जो सदा यज्ञ करते हैं; ऐसे गृहस्थ सदा ही श्रेष्ठ सम्पत्तियों के स्वामी होते हैं; उन्हें इस यज्ञ के पुष्य प्रभाव से सदैव ज्ञानियों की सत्संगति के साथ ही धन की प्राप्ति भी होती है।

गीता के 9/13 वे श्लोक में भगवान श्री कृष्णजी कहतें हैं–

अहं क्तुरहं यज्ञः स्वधाहमहमौषधम्।

मन्त्रोऽहमहमेवाज्यमहमग्निरहं हुतम्।।

अर्थात–भगवान श्री कृष्ण जी कहतें हैं–श्रौत कर्म मैं हूॅं; मैं यज्ञ हूॅं; मैं स्वधा हूॅं; मैं औषधि हूॅं; और मैं ही मंत्र ; धृत; अग्नि; और हवन हूॅं।

यज्ञ का महत्व–

यज्ञ के बारें में समस्त ग्रन्थों का एक ही मत है; कि यज्ञ परमार्थ के लिए किया जाता है परन्तु यज्ञ से अभिष्ट की सिद्धि तथा अनिष्ट का निवारण भी किया जाता है।

वेदों में यज्ञ महिमा –

अथर्ववेद 3/11/2 में कहा है–

यदिक्षितायुर्यदि वा परेतो मृत्योरन्तिक नीति एवं।

तमाहराभिनि ऋते रूपस्था तस्यार्थमेनं शत शारपाय।।

अर्थात—यदि रोगी अपनी जीवन शक्ति को खों चुका हो; निराशाजनक स्थिति को पहुॅच गया हो; यदि मरणकाल भी सामने आ पहुॅचा हो तो भी यज्ञ उसे मृत्यु के चगॅुल से बचा लेता है और सौ वर्ष जीवित रहने के लिए पुनःबलवान बना देता है।

यजुर्वेद 3/63 में कहा है—

शिवो नमामि स्वधितिस्ते पिता नमस्ते अस्तु मा मा हि असिः।

निवर्त्तयाम्यायुषेऽन्नाद्यय प्रजननाय रायस्पोषाय सुप्रजाझत्वाय सुवीर्याय।।

अर्थात—हे यज्ञ देव! टाप निश्चय ही कल्याणकारी हैं। स्वयंभूं परमेश्वर आपके पिता है। आपके लिए नमस्कार है। आप हमारी रक्षा करें दीर्ध आयु; उत्तम अन्न प्रजनन—शक्ति; ऐश्वर्य—समृद्धि श्रेष्ठ—सन्तति एवं मंगलोन्मुखी बल—पराक्रम के लिए हम श्रद्धा विश्वास पूर्वक आपका सेवन करतें हैं।

यजुर्वेद 3/40 में कहा है—

अयमग्निः पुरीष्यो रयिमान् पुष्टिवर्धनः।

अग्रे पुरीष्याभि द्युम्रमभि सहऽआयच्छस्व।।

अर्थात—यह यज्ञाग्नि वृष्टि कराने वाली है धन देने वाली तथा पुष्टि और शक्ति को बढाने वाली है। हे पुरीष्य अग्नि देव! आप हमारे सव ओर बल और यज्ञ का विस्तार करें।

यजुर्वेद 3/8 में कहा है—

त्रिःशद्धाम विराजति वाक् पतंगाय धीयतें।

प्रति वस्तोरह द्युभिः।

अर्थात—इस यज्ञ को प्रतिदिन किया जाता है यह यज्ञ अपनी प्रदीप्त ज्वालाओं से युक्त निरन्तर यज्ञकर्ता के अन्दर बिराजता रहता है। फिर ऐसी दशा में किसी अन्धकार असुर अज्ञान को ठहरनें के लिए यहॉ अवकाश ही कैसे हो सकता है।

सच्चे यज्ञ कर्ता एक दिन सम्पूर्ण अन्धकार और अज्ञान से मुक्त होकर दिव्य परमात्मा के चरणों में पहुॅच जातें हैं।

शर्मास्य वधुतळरक्षोवधूताऽअरायोदित्यास्त्वगसि प्रति त्वादि तिर्वेत्तु।

अद्रिरसि वानस्पत्यो ग्रावासि पृथुबुध्नः प्रति त्वादित्या स्त्वग्वेत्तु।।

अर्थात–हे यज्ञ! आप सुखकारक एवं आश्रय देने वाले हैं; आप से रोग नष्ट होते हैं; तथा रोग के कीटाणु भी ध्वस्त होतें हैं; आप पृथ्वी के लिए त्वचा की भॉति रक्षक हो। आप हरित वनस्पतियो से आच्छादित पर्वत के सदृश्य सुन्दर सुहावने और हितकारी हैं। आप इस सविस्तृत आकाश में जल से लवालव भरे वर्षाभिमुख बादलो के सदृश्य हैं।

यजुर्वेद 2/2 में कहा है–

अदित्यै व्युन्दनमसि विष्णोः स्तुपोऽस्युर्णम्प्रदसं त्वा स्तृणामि

स्वसस्थां देवेभ्यो भुवपतये स्वाहा; भुवन पतये स्वाहा भूताना पतये स्वाहा।

अर्थात–हे यज्ञ! तुम पृथ्वी को सींचने वाले हो अर्थात पृथ्वी निवासियों को सर्वांगीण अभ्युन्नति और कल्याण के अमृत से अभिसिंचन करते हो। हे देवो को सुखद स्थिति देने वाले एवं सभी भॉति रक्षा करने वाले यज्ञ! हम तुम्हें सुविस्तृत और सूक्ष्मतम बनाना चाहतें हैं।

उपनिषदो में यज्ञ–रहस्य

कठोपोनिषद 1/1/17 के अनुसार–

त्रिणाचिकेतास्त्रिभिरेत्य सधिं त्रिकर्मकृत्तरति जन्ममृत्यु।

ब्रह्मजज्ञं देव मीडयं विदित्वा निचाय्येमाळशान्तिमत्यन्तमेति।

अर्थात–इस अग्नि का शास्त्रोक्त रीति से तीन वार अनुष्ठान करनें वाला पुरूष ऋक् यजु; साम; तीनो वेदों के साथ सम्बन्ध जोडकर यज्ञ दान तप –तीनों कर्मों को करतें रहनें वाला; मनुष्य जन्म–मृत्यु के बन्धन से मुक्त हो जाता है। ब्रह्मा से उत्पन्न सृष्टि को जानने वालें स्तवनीय इस अग्नि को भली–भॉति जानकर ; इसका

उचित रीति से चयन करके उस अनन्त शान्ति को प्राप्त कर लेता है; जो मुझको प्राप्त है।

मुण्डकोपनिषद 1/2/5 में कहा है–

एतेषु यश्चरते भ्राजमानेषु यथाकालं चाहुतयो ह्माददायन्।

तं नयन्त्येताः सूर्यस्य रश्मयो यत्र देवानां पतिरेकोधिऽवासः।।

अर्थात–जो कोई भी अग्निहोत्री इन देदीप्यमान ज्वालाओं में ठीक समय पर अग्निहोत्र करता है; उस अग्निहोत्र को निश्चय ही अपने साथ लेकर ये आहुतियॉ सूर्य की किरणें बन कर उसे स्वर्ग में पहुॅचा देती हैं; जहॉ देवताओं का एक मात्र पति निवास करता है।

गीता में भी यज्ञ महिमा का गान किया गया हैं श्लोक 3/10 के अनुसार–

सहयज्ञाः प्रजाःसृष्टा पुरोवाच प्रजापतिः।

अनेन प्रसविष्यध्वमेष वोऽस्त्विष्टकामधुक्।।

अर्थात–कल्प के प्रारम्भ में प्रजापति ने यज्ञ सहित ही प्रजाओं की रचना की और कहा कि इसके अर्थात यज्ञ के द्धारा तुम लोग बुद्धि को प्राप्त करो और यह यज्ञ ही तुम लोगों की इष्ट कामनाओं को पूर्ण करने वाला है।

गीता 3/11–

देवान्भावयतानेन ते देवा भावयन्तु वः।

परस्परं भावयन्तः श्रेयः परमवाप्स्यथ।।

अर्थात–इस यज्ञ के द्धारा देवताओं की उन्नति करो; और वे देवगण भी तुम लोगों की उन्नति करें। परस्पर उन्नति करते हुए श्रेय को प्राप्त होओगें।

गीता 3/12 –

इष्टान्भोगान्हि वो देवा दास्यन्ते यज्ञभाविताः।

तैर्दत्तानप्रदायैभ्यो यो भुङ्क्ते स्तेन एव सः।।

अर्थात– यज्ञ भावित देवगण तुम लोगें को इष्ट भोग प्रदान करेंगें। उनके द्धारा दियें भोगों को जो पुरूष इनके लिए विना दियें ही भोग करता है वह निश्चय ही चोर है।

गीता 3/14–

अन्नाद्भवन्ति भूतानि पर्यन्यादन्न सम्भवः।

यज्ञाद्भवति पर्यन्यो यज्ञः कर्मसमुछ्भवः।।

अर्थात–सम्पूर्ण प्राणी अन्न से उत्पन्न होते हैं और अन्न की उत्पत्ति पर्यन्य अर्थात वर्षा से होती है और वर्षा यज्ञ से होती है। और यज्ञ तो कर्म से ही उत्पन्न होतें हैं।

रामायण में भी यज्ञ की महिमा का गान किया गया है बाल काण्ड में जव दशरथ जी बशिष्ठ के पास सन्तान की कामना से जातें हैं तव बशिष्ठ जी उन्हे उपाय बतातें हैं उस समय बाल काण्ड 188/189 में कहा है–

श्रृंगी रिषिहिं बसिष्ठ बोलावा। पुत्र काम शुभ जग्य करावा।।

भगति सहित मुनि आहुति दीन्हें। प्रगटे अगिनि चरू कर लीन्हें।।

यह हवि बॉटि देहु नृप जाई। जथा जोग जेहिं भाग बनाई।।

तबहि राय प्रिय नारि बुलाई। कौसल्यादि तहॉ चली आई।।

अर्ध भाग कौसल्याहि दीन्हा। उभय भागआधे कर कीन्हा।।

कैकेई कहैं नृप सो दयऊ। रह्मो सो उभय भाग पुनि भयऊ।।

कौसल्या कैकेई हाथ धरि। दीन्ह सुमित्रहिं मन प्रसन्न करि।।

एहि बिधि गर्भ सहित सव नारी। भई ह्रदय हरषित सुख भारी।।

रावण भी जानता था कि देवताओं को शक्ति यज्ञ से ही प्राप्त होती है इसलिए उसने राक्षसो का`यज्ञ नष्ट करनें के लिए कहा था।

बालकाण्ड 181–

द्धिज भोजन मख होम सराधा। सब कै जाइ करहु तुम बाधा।।

क्षुधा हीन बल हीन सुर; सहजेहि मिलिहहिं आई

तब मारिहउ कि छाडिहॅउ; भली भॉति अपनाइ।।

बाल्मीकि रामायण आदि काण्ड के 19 सर्ग में यज्ञ की रक्षा हेतु विश्वामित्र जी दशरथ जी से कहतें हैं–

अहं नियममातिष्ठे सिद्धयर्थं पुरुषर्षभ।

तस्य विध्रकरौ द्धौ तु राक्षसौ कामरूपिणौ।।4।।

कृतश्रमो निरुत्साहस्तस्माद् देशाद्पाक्रमें।

न च मे क्रोधमुत्स्रष्टुं बुद्धिर्भवति पार्थिव।। 7।।

तथाभूता हि मा चर्या न शापस्तत्र मुच्यतें।

स्वपुत्रं राजशार्दूल रामं सत्यपराक्रममम्।। 8।।

काकपक्षधरं वीरं ज्येष्ठं मे दातुमर्हसि।

अर्थात–हे राजन! टाजकल मैं एक महायज्ञ सम्पन्न कर रहा हूॅ । कामरूपी दो राक्षस उसकी समाप्ति के पूर्व ही विध्र पैदा कर देतें हैं। 4। जब हमारे यज्ञ की प्रतिष्ठा भ्रष्ट हो जाती है तो श्रम व्यर्थ हो जाता है इस कारण निराश होकर मैं यहॉ चला आया हूॅ। हे पार्थिव! मैं उनको श्राप दे सकता हूॅ परन्तु इस यज्ञ में क्रोध बर्जित है।7। कारण कि ऐसे यज्ञ के साधन काल में किसी को शाप नही देना चाहिए। हे राजाओं के सिंह! आपसे यह प्रार्थना है कि सत्य पराक्रमी रामचन्द्र को; जो काकपक्ष धारण किये महावीर श्रेष्ठ हैं उनको मेरे हाथ में सौप दीजिये। यह मेरे दिव्य तेंज के प्रभाव से मेरे द्धारा रक्षित किये जाकर ; मेरे यज्ञ की रक्षा करनें में समर्थ होगें। 8।

रावण और मेद्यनाथ भी अपनी पराजय होते देख अपनी कुल देवी मॉ निकुम्भिला की आराधना व यज्ञ करता है। बाल्मीकि रामायण युद्ध काण्ड 80/7 में यह धटना इस प्रकार से बर्णित है–

एतस्तुहुत भोक्तारं हुतभुक्सदृशप्रभः।

जुहुवे राक्षसश्रेष्ठो विधिवन्मन्त्रसत्त।।18।।

स हविर्लाजसत्कारैर्माल्यगन्धपुरस्कृतैः।

जुहुवे पावकं तत्र राक्षसेन्द्रःप्रतापवान्।।19।।

शस्त्राणि शरपत्राणि समिधोऽथ बिभीतकाः।

लोहितानि च वासांसि स्त्रुवं कार्ष्णयसं तथा।।

अर्थात–इस स्थान का नाम निकुम्भिला था अग्नि तेजस्वी इन्द्रजीत यहॉ पर विधि पूर्वक अग्नि में होम करनें लगा।18। उस प्रतापशाली राक्षसों में श्रेष्ठ इन्द्रजीत ने प्रथम अग्नि में माला और सुगन्धित दृव्य चढाकर उसके बाद खीर एवं अक्षत से उसका संस्कार पूरा करके हवन कर्म को आरम्भ किया।19। उस हवन कुण्ड के चारो ओर जहॉ सरपत बिछाना चाहिए वहॉ उसनें सब शस्त्र बिछाये व बहेडे की लकडी को ईधन बनाया समस्त वस्त्र लाल रंग के ही धारण किये और लोहे का स्त्रुवा बनाया ;मारण में यही पदार्थ काम में आते हैं।

जव बिभीषण को इस यज्ञ की सूचना मिलती है तो वे लक्ष्मण जी से कहतें हैं–

बाल्मीकि रामायण युद्ध काण्ड सर्ग 86–

स त्वमिन्द्राशनिप्रख्यैः शरैरवकिरन्परान्।

अभिद्रवाशुयावद् वै नैतत्कर्म समाप्यते।।4।।

अर्थात– जव तक यी अभिचारिक होंम पूरा नही होता तव तक इन्द्रवज्र सदृश वाणो से आप राक्षसो की सेना को पीडा देते रहिये।

उन्होन ने ऐसा ही क्या और परिणाम क्या हुआ ? देखिए इसी सर्ग के 14 वे श्लोक में–

स्वमनीकं विषण्णं तु श्रुत्वा शत्रुभिरार्दितम्।

उदतिष्ठत दुर्धर्ष सकर्मण्यननुष्ठिते।। 14।।

अर्थात—इस ओर अजय रावण पुत्र अपनी सेना शत्रु के दलो से मूर्छित देख अपने यज्ञ को बिना पूरा किये ही उठ बैठा।

स्पष्ट है राक्षस भी यज्ञ से पुष्ट होते थे यज्ञ का प्रताप ही ऐसा है जो असंभव को भी संभव कर सकता है।

श्री मद्भागवत में यज्ञ की महिमा गान

श्री मद्भागवत में अनेको स्थानों पर यज्ञ की महिमा का गान किया गया है सृष्टि का आरम्भ यज्ञ से ही हुआ। जिज्ञासा के उत्तर में ब्रह्माजी विराट भगवान के स्वरूप का वर्णन भागवत स्कन्द 2 अध्याय 6 श्लोक 22; 23; 24 में करते हैं—

यदास्य नाभ्यां नलिनादहमासं महात्मनः।

नाविदं यज्ञसंभारान्पुरुषावयवादृते ।।

तेषु यज्ञस्य पशवः सवनस्पतयः कुशाः।

इदं च देवयजनं कालश्चोरूगुणान्वितः।।

वस्तून्योषधयः ज्ञनेहा रसलोहमृदो जलम्।

ऋचो यर्जूषि सामानि चातुर्होत्रं च सत्तम।।

अर्थात—जिस समय व्यापक ब्रह्मा की नाभि से मैं उत्पन्न हुआ तव पुरूष के अवयव को छोडकर यज्ञ की कुछ भी सामग्री नही देखी। उनके यज्ञ से पशु वनस्पति कुशा और देवताओं के यज्ञ करने योग्य भूमि और जिसमें बहुत से गुण भरे हो ऐसे समय की रचना की। सब पात्रादि रचे औषधि धृतादिक मधुरादिक स्वर्णादिधातु मृत्तिका जल ऋक् ; यजु ; साम एवं अथर्ववेद चार ब्राह्मण जिससे हवन किया जाये ; ऐसे कर्मो की भी स्रष्टि की।

गतयो मतयःश्रद्धा प्रायश्चितं समर्पणम्।

पुरुषावयवैरेते संभाराः संभृता मया।।26।।

इति सम्भृतसंभारः पुरुषावयवैरहम्।

तमेव पुरुषं यज्ञं तेनवायजीमश्वरम्।।27।।

ततश्च मनवः काले ईजिरे ऋषयोऽपरे।

पितरो विबुधा दैत्या मनुष्याः क्रतुभिर्विभुम्।। 29।।

अर्थात–विष्णु क्रमादि गति; देवताओं का ध्यानादि मति; श्रद्धा प्रायश्चित उसे भगवदर्पण करना आदि पुरुष अवयवों से ही मैंनें रचना की। पुरुष के अवयवों की ऐसी सब सामग्री से पूजनीय परमात्मा ने पुरुष का यज्ञ कियां उसके पीछे अपने–अपने समय में सभी मनुष्य ऋषि पितर देवगण तथा दैत्यादिकों ने भी यज्ञ के द्धारा यज्ञेश्वर यज्ञरुप भगवान का पूजन किया। राजा दक्ष ने अपनें यज्ञ का विध्वंस होनें तथा सुपुत्री सती के निधन के उपरान्त बहुत दुख माना और शिवजी से क्षमा मॉगने के पश्चात् अपनी भूल के प्रायश्चित रूप में ही विशद् यज्ञ को पूरा किया। जिसका वर्णन भागवत चतुर्थ स्कन्द के अध्याय 7 श्लोक 16; 17 18 में किया है–

क्षमाप्यैवं स मीढ्वांसं ब्रह्मणा चानुमन्त्रितः।

कर्म सन्तानयामास सोपाध्यायर्त्विगग्रिभिः।।

वैष्णवं यज्ञसंतत्यै त्रिकपालं द्धिजोत्तमाः।

पुरोडाशं निरवपन् वीरसंसर्गशुद्धये।।

अध्वर्युणात्तहविषा यजमानो विशाम्पतें।

धिया विशुद्धया दध्यौ तथा प्रादुरभूद्धरिः।।

अर्थात–इस भॉति दक्ष ने अपना अपराध क्षमा कराया और ब्रह्माजी से सम्मति लेकर उपाध्याय ऋत्विज अग्नि सहित यज्ञ कर्म आदि का सुन्दरता सहित विस्तार किया। तीन कपाल का पुरोडाश विष्णु के निमित्त यज्ञ सम्पूर्ण करने के हेतु प्रथमादिक वीरों की शुद्धि के लिए श्रेष्ठ ब्राह्मणों को दिया। अध्वर्यु ने जव हवि हाथ में लेकर यजमान सहित विशुद्ध वुद्धि पूर्वक हवन कर भगवान वासुदेव का ध्यान किया उसी समय भगवान साक्षात रुप से प्रकट हो गयें।

ऋषभदेवजी भगवान के अवतार माने ंजातें हैं उन्ही के पुत्र भरत के नाम पर इस देश का नाम भारत वर्ष पढा। उन्ही भरत ने इस देश को तपोभूमि बनाया।

भागवत पंचम स्कन्द अध्याय 4 में कहा है—

द्रव्यदेशकालवयः श्रद्धर्त्विग्विविधोद्देशोपचितैः।

सर्वैरपि कतुभिर्यथोपदेशं शतकृत्व इयाज।।17।।

भगवतर्षभेण परिरक्ष्यमाण एतस्मिन्वर्षे न

कश्चन पुरुषो वांछत्यविद्यमानमिवात्मनो—

ऽन्यस्मात्कथंचन किमपि कर्हिचिदवेक्षते

भर्तर्यनुसवनं विजृम्भितस्नेहातिशयमन्तरेण।।18।।

अर्थात—भरत ने सव भॉति पूर्ण विधि से सौ—सौ बार अश्वमेध यज्ञ कियें। उनके वे सव यज्ञ साधारण नही हुए। दृव्य देश काल यौवन श्रद्धा ऋत्विक अनेक देवताओं के अर्थ इत्यादिक द्धारा अतिशय बढ—चढ कर सम्पन्न हुए। उस समय किसी पुरुष की दूसरे पुरुष के लिए आकाश पुष्पवत कुछ भी प्रार्थना करने की इच्छा नही हुंई और कोई दूसरे की वस्तु पर लोभ की दृष्टि नही रखता था । सव में स्नेह शील था आपस में प्रेम था।

अन्य ग्रन्थों में यज्ञ महिमा का गान

चरक चि0 खण्ड 8/122 में कहा है—

प्रयुक्तया यथा चेष्ट्वा पाजयक्ष्मा पूरोजितः।

तां वेद विहितामिष्ठामारोग्यार्थी प्रयोजयेत्।।

अर्थात—तपौदिक सरीखें रोगों को प्राचीनकाल में यज्ञ के प्रयोग से नष्ट किया जाता था। रोग—मुक्ति की इच्छा रखनें वालों को चाहिए कि उस वेद रहित यज्ञ का आश्रय लें।

शंख शास्त्र में कहा है—

नास्त्य यज्ञस्य लोको वै ना यज्ञो विन्दते शुभम्।

अयज्ञो न च पूतात्मा सष्यष्तिछिन्न पूर्ण्रवत्।

अर्थात–यज्ञ न करने वाला मनुष्य लौकिक और परलौकिक सुखों से वंचित रह जाता है। यज्ञ न करने वालें की आत्मा पवित्र नही होती है और वह पेड से टूटे पत्तें की तरह नष्ट हो जाता है।

यज्ञ से आरोग्यता

अग्नि कृष्णोतु भेषजम्। अर्थात–यज्ञाग्नि औषधि का काम करती है। अग्नि में होम की गई औषधि लाभकारी है।

यजुर्वेद के 12/99 में कहा है–

सहस्व में अरातीः सहस्व पृतनायतः।

सहस्व सर्वम् पाप्नात सहमानास्योषथेः।।

अर्थात– हे औषधि तू रोगों को दूर करनें वाली है अतः मेरी शक्ति हरनके वालें रोगो को दूर करके युद्ध की तरह शरीर को क्षीण करने वाले सभी रोगों को पराजित कर उन्हें दूर भगा दो।

शतपथ ब्राह्मण में कहा है–

भैषज यज्ञा वा एते।

अर्थात–ऋतुओं के सन्धिकाल में भेषज्ञ यज्ञ कियें जाये। क्योकि तव मौसम बदलता हे तो अनेकों रोग उत्पन्न होतें है इसी कारण शास्त्र यज्ञ करनें का आदेश देता है वर्तमान समतय में लोग यज्ञ को भूल गये और अनेको प्रकार की बीमारियॉ बढ गई।

अथर्ववेद 3/11/2 में लिखा है–

यदिक्षितायुर्यदि वायरेती यदि' मृत्योरन्तिकंनीत एवं।

तमा हरामि निऋंते रूपारथा दस्यार्षमेन शतशारदाय।।

अर्थात–यज्ञ के माध्यम से दुर्बल काया रोगी तथा जिनकी शक्ति क्षीण हो गई है जो मृत्यु के समीप पहुॅच चुके हैं उन्हे भी सौ वर्ष पर्यन्त जीवित रहने को कहा गया है। इसी खण्ड में कहा है–

य एष एतत्करोति याश्च त्वेवास्यप्रज्ञा जाता याश्चाजाता रूताउभयी रूद्रियात्प्रमुन्चति अस्यान मीवाः अंकिल्विषाः प्रजाा प्रजायंते तस्मा द्धाऽएष एतैर्थजते।

अर्थात–यह यज्ञ जो संतान हो चुकी है तथा जो उत्पन्न नही है दोनो को रोग मुक्त रखनें में समर्थ है।

मत्स्य पुराण 145/3/33 में कहा है–यज्ञ से देवशक्तियों का वल बढता है वे अधिक सक्रिय एवं परिपुष्ट होती है और मनुष्य एवं समस्त संसार को उसके द्वारा विशेष लाभ होतें हैं। यदि यज्ञ विद्या का लोप हो जाये तो सृष्टि में जो सूक्ष्म अध्यात्मिक धाराऍ प्रचाहित हो रही हैं वे नष्ट हो जायेगी; लोग पशुत्व को प्राप्त होनें लगेंगें और आपस में लडकर मर जायेगें। वर्तमान समय में ऐसा ही हो रहा है। परमाणु वम की होड में मानव ने अपनें मौत का सामान तैयार कर लिया है। ऐसे समय में यज्ञ ही सव समस्या का समाधान है। जव तक पृथ्वी पर यज्ञ हो रहें है पृथ्वी सुख सुविधाओं से युक्त रही है आपस में प्रेम शान्ति आनन्द सहयोग करूणा संयम की भावना रही परन्तु आज इनका लोप हो रहा है मानव स्वार्थवादी हो गया। आपस में मार काट शुरू कर दी जीव जन्तुओ को मारने लगा गाय अथवा दुधारू पशु ने जव तक दूघ दिया उसे तक साथ रखा उसके दुग्धविहीन होने पर उसे धर से निकाल दिया अथवा मार कर खा गया क्या हो अमारी सस्कृति को ? स्वार्थ क्यो आया ? स्पष्ट है यज्ञ का अर्थ ही परमार्थ होता है यज्ञ के अभाव में परमार्थ नही स्वार्थ ही वढेगा। आज आवश्यकता है पुनः यज्ञीय संस्कृति की ओर लौटने की तथी मानव संस्कृति बचेगी सुरक्षित रहेगी। अन्यथा विनाश निश्चित है......।

यज्ञ से सब कुछ संभंव है

महाभारत के आश्वमेधादिक पर्व के तीसरे अध्याय में व्यासजी ने युधिष्ठिर को कहा कि –देवता और असुर पापों के विनाश एवं पुण्यों के संचय के लिए यज्ञ अनुष्ठान करतें हैं। देवता यज्ञ से श्रेष्ठ बनें इसलिए असुरों को पराजित कर सके। अतः हे युंधिष्ठिर! तुम भी राजसूय अश्वमेध सर्वमेध नरमेध आदि यज्ञ अनुष्ठान करो। वास्तव में यज्ञ के द्धारा सभी कार्य सम्भव हैं इतिहास साक्षी है बडे कार्य यज्ञ और पुरूषार्थ के बल पर ही पूर्ण हुए हैं। पुरूषार्थ का दूसरा नाम मानवता है जहॉ चारों पुरूषार्थ–धर्म अर्थ काम मोक्ष। मानव को आनन्द सद्गति और सेवा प्रदान कर मोक्ष मार्ग प्रशस्त करतें है। बगैर सेवा एवं लोकोपकार परक कार्य के मानव मोक्ष प्राप्त नही कर सकता है। भलें मानव ने कितना ही तप किया हो यदि वह मानवता से बंचित है तो मोक्ष और आनन्द नही मिल सकता है जिन लोगों ने मानवता परक कार्य कियेंहै वे आज भी पूजनीय सम्मानीय बनें हुए है।

अठासी हजार ऋषियों ने स्वर्ग हेतु नैमिषारण्य के पवित्र क्षेत्र में दस हजार वर्ष तक लगातार दीर्ध यज्ञ किया जिसके प्रभाव से नैमिषारण्य आज भी पवित्र तीर्थ वना हुआ है। जहॉ मानवता के अनेंकों कार्य हो रहें है। धार्मिक क्षेत्र में रहनें वालें व्यक्तियों पर सकारात्मक प्रभाव पडता है ऐसे व्यक्ति करूणावान सेवाभावी संयमी एवं सहानुभूति के कार्यो में सलग्न रहतें है।

प्रकृति भी यज्ञ कर रही है

पृथ्वी हवनकुण्ड है सूर्यरूपी अग्नि वृष्टि को जन्म देती है सूर्य से अन्न और अन्न से ही मनुष्य जीवन चलता है। प्रत्यक्ष रूप से चल रहे इस यज्ञ से ही सारा संसार चल रहा है। प्रकृति यज्ञ अन्न के साथ–साथ पर्यावरण को भी शुद्ध करता है। जिस प्रकार यज्ञ के समीप बैठे मनुष्य को यज्ञीय उर्जा एवं वनौषधी का लाभ मिलता है उसी प्रकार वृक्ष वनस्पति के माध्यम से वायु विकार दूर होतें है पर्यावरण शुद्ध होता है। जहॉ श्हरों का दूषित वातावरण मनुष्य के स्वास्थ को प्रभावित करता है वही ग्रामीण परिवेश खेतों में लहलहाती फसल मानव मन एवं स्वास्थ को लाभ प्रदान करती है। इसलिए उद्यान एवं गमलों में पौधे लगानें पर गल दिया जाता है और इनसे मनुष्य लाभ भी होता है।

प्रकृति एक बीज के बदलें असंख्य बीज प्रदान करती है विभिन्न प्रकार के फल फूल मेवा सव्जियॉ प्रकृति से ही मिलती है जिनसे मानव को जीवन मिलता है जन्तु तंन्तु का पोषण भी प्रकृति से ही हो रहा है। इसलिए मानव की जिम्मेदारी है कि वो प्रकृति का संरक्षण पोषण परिशोधन करें जितना प्रकृति शुद्ध;होगी मानव उतना ही वलिष्ठ होगा। प्रकृति की अशुद्धता एवं प्रकोप दोनो ही मानव के लिए हानिकारक सिद्ध हो सकतें हैं। जव से वन जंगल काटे गये तव से ही प्रकृति कुपित हुई नई नई बीमारियॅा वढी और अभी और बढेगी।

मन को स्वस्थ रखनें के लिए तुलसी वृक्ष के समीप वैठना चाहिए उत्तम स्वस्थ के लिए पीपल वरगद नीम के समीप दिन में बैठना चाहिए। संभंव हो तो इन वृक्षों नीचे गायत्री मंत्र अथवा गुरू मंत्र इष्ट मंत्र का जाप अथवा यज्ञ करें। अधिक से अधिक वृक्ष लगायें गमले लगाकर अपनें धर में रखे उनका पोषण करें।

हमारें तीज त्यौहार इसलिए वनें जिससें मानव को संदेश मिले और मानव प्रकृति से जुडा रहे'होली में गुड जौ सोठ की गुजिया डालनें के पीछे यही कारण है प्रकृति में व्याप्त हानिकारक जीवाणु नष्ट हो और मानव स्वस्थ रहें प्रकृति स्वच्छ रहे। दीपावली पर गंधक पोटाश के पटाखें जलानें के पीछे यही यही बात समझ आती है वातावरण शुद्ध हो परन्तु आज हानिकारक पटाखें से मानव वातावरण को और अशुद्ध कर रहा है। नवरात्रि व्रत एवं यज्ञ कीने के पीछे भी शरीर और वातावरण को शुद्ध करनें का ही उद्‌देश्य है।

अन्ततः हम कह सकतें हैं प्रकृति यज्ञमय है परोपकार मय है मानवता के कार्यो में अपना योगदान दे रही है उसी की प्रेरणा से सवकुछ चल रहा है प्रकृति यज्ञ के कारण ही सव संरक्षित एवं पोषित है परन्तु प्रकृति का नाश कर रहा है जिसके परिणाम अच्छे नही है। प्रकृति से पृथक प्राणी करूणा विहीन निर्दयी हो जाता है। प्रयोगों में ऐसा पाया गया है जो प्रकृति प्रेमी है जो जन सामान्य की अपेक्षा अधिक मानवता के गुणों से परिपूर्ण हैं।

जीवन ही यज्ञमय एवं मानवता मय है–

सम्पूर्ण पृथ्वी यज्ञमय एवं मानवता मय है मनुष्य एवं जीवात्मा का जीवन भी यज्ञ ही है सॉस एक आहुॅति है–जो विधिवत सम्पन्न हो रहा है। सरल भाषा में कहे तो जीवन यज्ञ है गायत्री इष्ट है समय उसका हविष्य है। संयम; पराक्रम; और पुरूषार्थ के रूप में वसु रूद्र और आदित्य के अनुशासन में चलना वाहिए। जो इस रहस्य को समढ लेतें हें वे कभी रोग शोक सन्ताप के चंगुलं में नही फसतें हैं।

छान्दोग्य उपनिषद 3/16/1–2 में कहा है–

पुरुषो वाय यज्ञः तस्य यानि चतुर्विंशति वर्षाणि;

तत् प्रातः सवनं ; चतुर्विंशति अक्षरा गायत्री;

गायत्रं प्रातः सवनं; तदस्य सववो अन्वायताः;

प्राणा वाव वसवः;एते हीदं सर्व वासयन्ति। 1।

तचेदस्मिन् वयसि किंचिदुपतपेत् स ब्रूयात्;

प्राणा वसवःइदं में प्रातः सवनं माध्यन्दिनं

सवनं अनुसन्तनुत इति माऽहं प्राणानां वसूनां

मध्ये यज्ञो विलोप्सीय इति; उद्धैव तत एति;

अगदो ह भवति। 2।

अर्थात–मनुष्य का जीवन एक यज्ञ है उसकी आयु प्रथम 24 वर्ष का प्रातः सवन अर्थात प्रातःकालीन यज्ञ है। गायत्री मंत्र के 24 अक्षरों वाला है प्रातः सवन मे गायत्री छन्द का ही प्रयोग होता है।प्राण ही समस्त शक्तियों का निवास अथवा अधिष्ठाता है जिसके देवता वसु है। यदि इन 24 वर्षो में मनुष्य को कोई रोग हो जाये तो ऐसा मानना चाहिए कि वसुगण अर्थात प्राण! यह मेरा प्रातः सवन मध्यान्हन सवनक` साथ संयुक्त करो अर्थात जीवन के 24 वर्ष ब्रह्चर्या पूर्वक रहकर अगले 24 वर्ष सशक्त करों । शास्त्रकार के कहने का अभिप्राय यह है कि जो व्यक्ति प्रथम 24 वर्ष

साधना संयम अनुशासन में रहता हे उसकी आगामी आयु वर्ष अच्छे व्यतीत होतें हैं अन्यथा असंयम व्यक्ति बीमार हो कर पीडित जीवन व्यतीत करता है।

जीवन जीना भी एक कला है जो यज्ञ की भॉति परमार्थ साधनामय संयमित जीवन जीतें हैं वे कभी रोग के दलदल में नही फसते हैं। मौसम परिवर्तन से रोग हो सकते है परन्तु यह रोग अल्पकाल के ही होतें है परन्तु कुछ रोग ऐसे भी होतें है जो बैधों के समझ में भी नही आतें हैं। स्मरण रहे कमजोर शरीर एवं मन पर ही रोग हावी होतें है इसे ऐसे भी कह सकते है जिनकी शारीरिक मानसिक शथ्कत कमजोर होती है व जल्द बीमार होतें हैं और उन्हे अनेको बीमारियॉ असमय धेर लेती है। नित्य यज्ञ करनें से मनुष्य में आन्तरिक शक्ति का विकास होता है मनोवल बढता है मन के ढीले पन पर अंकुश लगता है। मजवूत मन वाले किसी भी समस्या अथवा स्थिति में अपना मनोवल न ही खोतें हें और न ही किसी परिस्थिति से प्रभावित होतें है। वल्कि वे अपने मजवूत मनोवल से सवको प्रभावित करतें हैं युग को बदलनें की शक्ति उनमें होती है इतिहास साक्षी है मनोवल के धनी व्यक्तियों ने संसार को हिलाया है अमूल–चूल परिवर्तन कियें हैं अतः जिनसे स्वयं को यज्ञमय वना दिया वो हर पथ पर सफल सुरक्षित रहा और सवको सुरक्षित रखा।

विश्व ब्रह्माण में यज्ञ एवं मानवता व्यापक है–

वैदिक संस्कृति में यज्ञ के तीन क्षेत्र बताऍ हैं–1 ब्रह्माण्ड 2–शरीर 3–संसार । अखिल विश्व ब्रह्माण्ड में अनेको ज्ञात अज्ञात कियाऍ चल रही हैं जिनके पीछे अदृश्य शक्तियॉ नक्षत्र ऋतु–परिवर्तन इन्द्र; वरुण; मरुत रूद्र की शक्तियॉ; मानव द्वारा निर्मित कियाऍ–प्रतिकयाऍ आदि हैं।

शरीर का संचालन पंच तत्वों के द्वारा हो रहा है जिनमें अपान; समान व्यान उदान प्राण त्यागादि कफ वायु पित्त वात मन चित बुद्धि अहंकार एवं पंच कोश की गतिविधियॉ आदि हैं। ब्रह्माण्ड और शरीर में स्व–चालित यज्ञ परमार्थ हो रहा है जिनें गति प्रकिया बिगड जानें पर अवरोध उत्पन्न हो जाता है जिनको बीमारी रोग महामारी भी कह सकतें है। ब्रह्माण्ड यज्ञ में गडवडी हो तो भकम्प तूफान अतिवृष्टि अनावृष्टि दुर्भिक्ष रोग महामारी युद्ध भय विक्षोभ विद्धेष शोक के रूप में सामने आतें है।

शरीर यज्ञ में गडगडी होने पर दुर्वलता निराशा अल्पायु दुर्भाव चिन्ता मतिभ्रम अस्वस्थता एवं अनेको शारीरिक मानसिक बीमारियॉ उत्पन्न हो जाती हैं।

उनरोक्त दोनों प्रकारों में किसी न किसी माध्यम से औषधि प्रयोग करके समस्या निदान किया जाता है। यज्ञ अथवा हवन द्धारा हव्य पदार्थो एवं वेदमंत्रों द्धारा पिण्ड एवं ब्रह्माण्ड में हो रहे यज्ञों का संमुलन ठीक करके संसार में सुख शान्ति की स्थापना की जाती है।

ब्रह्माण्ड यज्ञ के सम्बन्ध में गोपथ ब्रह्माण 1/13 में कहा है–

तमाहरत् येना यज्ञत तस्याग्निर्होताऽऽसीत् वायु–रध्वर्युः।

सूर्य उद्गाता चन्द्रमाब्रह्मा र्प्यन्य सहदस्य ।।

अर्थात–अग्नि–होता; वायु– अध्वर्यु; सूर्य–उदगाता; चन्द्रमा; ब्रह्मा और मेध सदस्य हैं। यजुर्वेद में कहा है–

सपतस्यासन परिधय स्त्रिसप्त सतिधः कृताः;

देवा यज्ञ मतन्वानाऽअवध्नन्पुरुषं पशुम्।

यत्पुरुषेण हविषा देवा यज्ञमतन्वत; वसन्तो

स्यासीदाज्यं ग्रीष्म इध्मःशरद्धविः।

अर्थात–यज्ञ की वेदी सात परिधियों वाली है उसमें 21 समिधाएँ हैं–ऐसा यज्ञ ; देवताओं द्धारा फैलाया हुआ है। पशु पुरूष रूप –इन यज्ञों से बधे हुए हैं। पुरूष की हवि प्राप्त कर देवता इस यज्ञ को विस्तृत करतें हैं।

अथर्ववेद 11/10/29 में शरीर यज्ञ के में बताया है–

अस्थि कृत्वा समिधं तदष्टापो असादयन्।

रेतः कृत्वाऽऽज्यं देवाः पुरुषमाविशन्।।

अर्थात–अस्थियों को समिधा; वीर्य को धी;–मानकर आठ प्रकार के रसों को जेकर सब देवताओं ने पुरुष की देह में प्रवेश किया।

यही बात शतपथ ब्राह्मण में कही है–

पुरुषो वै यज्ञःपुरुषस्तेन यज्ञो यदेनं पुरुषस्तनुते।।

अर्थात–यह पुरुष देह ही यज्ञ है क्योकि इसी से यज्ञ किया जाता है।

वास्तव में संयुक्त प्रयास से ही यज्ञ चल रहा है जो देवशक्तियॉ आकाश में सृष्टि संचालन करती है वे ही मनुष्य शरीर में प्रवेश कियें हुए हैं और दोनों का ही परस्पर सम्बन्ध है। सर्दी गर्मी प्रकाश अन्न वायु जल आदि ब्रह्माण्ड से पिण्ड को मिलातें हैं। मानव इन्द्रियॉ इन तत्वों के अधीन हैं यदि प्रकाश न हो ऑख क्या कर सकती है ? यदि वायु न हो तो त्वचा बेकार है । शव्द न हो तो कान क्या कर सकतें हैं ?

अतः पिण्ड और ब्रह्माण्डगत दोनों ही क्रिया–कलाप यज्ञ–आपस में सम्बन्धित हैं। एक यज्ञ से दूसरा यज्ञ होता है। शतपथ ब्राह्मण में कहा है–**यज्ञाद्यज्ञं निर्मिता इति। अर्थात**–मै यज्ञ से ही यज्ञ को बनाता हूॅ। ऐसा ही वेदवचन है–**यज्ञो यज्ञेन कल्पताम्। यज्ञेन यज्ञ मयजन्त देवाः। अर्थात**–यज्ञ द्धारा ही यज्ञ बनें हैं। देवता यज्ञ से ही यज्ञ कर रहे हैं उस यज्ञ का धी बसन्त ऋतु' ईधन–ग्रीष्म; ऋतु और हवि शरद ऋतु हैं।

विवेचना से स्पष्ट है कि सम्पूर्ण विश्व–ब्रह्माण्ड यज्ञमय है शरीर भी यज्ञ द्धारा संचालित हो रहा है तथा विभिन्न रूपों में यज्ञ कर भी रहा है। यज्ञ के अभाव में कुछ नही है और न ही किसी निर्माण विकास की कल्पना की जा सकती है। यज्ञ का दूसरा नाम मानवता ही है।

यज्ञ आरोग्य प्रदान करता है और मानवता शान्ति

प्राचीन समय में आरोग्य वृद्धि एवं रोग निवारण के लिए नित्य यज्ञ होतें थे दनको भैषज यज्ञ कहतें हैं उनका ब्रह्वा आरोग्य मर्मक विद्धान होता था जो वैज्ञानिक परिक्षण के बाद जान लेता था कि वायुमण्डल में कैसे से विकार वढ रहें हैं और उनके निवारण के लिए यज्ञ में कौन सी औषधि प्रयुक्त करनी चाहिए। वायु मण्डल ही नही वरन् रोगी के शरीर में किन तत्वों के धटने बढनें से कौन सी बीमारी उत्पन्न हो रही है यह देखकर हवन सामग्री तैयार करायी जाती थीजिससें वातावरण और रोगी दोनों को लाभ मिलता था परन्तु आज यज्ञ अथवा हवन को कथित पंडितों ने व्यापार का साधन बना लिया है जो चिंता का विषय है। यज्ञ में आरोग्य वर्धक कृमिनाशक एवं रोग निवारक अद्‌भुत गुण हैं जहॉ जहॉ यज्ञ होतें है वहॉ का वातावरण एवं वहॉ रहने वाले लोग स्वस्थ होतें है।

इसलिए वैदिक संस्कृति में हर पर्व के साथ यज्ञ को जोडा गया है हमारें सोलह संस्कारों में भी यज्ञ अनिवार्य है सामूहिक यज्ञों में भी अधिकाधिक लोगों को यज्ञ में सम्मलित किया जाता था जिससें उन्हे आरोग्य प्राप्त हो–उन्हे भैषज यज्ञ कहतें थे गोपथ ब्राह्मण 1/11 में लिखा है–

भैषज्यज्ञाः वा एतेयच्चातुमास्यानि।

तस्माद् ऋतुसन्धिषु प्रयुज्जतें ।

ऋतु सन्धिषु चैर्व्याधिजायते।

अर्थात–जो चर्तुमास यज्ञ हैं वे भैषज यज्ञ कहलातें हैं क्योकि वे रोगों को दूर करनें के लिए होतें हैं पे ऋतु संधियों में किये जातें हैं क्योकि ऋतु संधियों में ही रोग फैलतें हैं।

अथर्ववेद 1/2/31;32;4;37;5/23;29 में अनेकों प्रकार के रोगात्पादक कृमियो का वर्णन आता है। इन्हे यातुधान; कतयात; पिशाच;रक्ष आदि नामों से सम्बोधित किया गया है। ये रोगाणु श्वास वायु भोजन जल द्धारा मनुष्य के शरीर में प्रवेश कर यातना पहुचातें हैं इसलिए इन्हे यातुधन कहतें हैं। शरीर के मांस को खाने के कारण क्रतयात अथवा पिशाच कहलातें हैं। इनसे मनुष्य को अपनी रक्षा करना

आवश्यक होता है इसलिए ये रक्षः अथवा राक्षस कहलातें है। यज्ञ में प्रयुक्त औषधि द्धारा इन रोगाणुओं को नष्ट कर मनुष्य को रोगो से बचानें का उपाय अथर्ववेद 1/4 में बताया है–

इदं हविर्यातुधानान् नदी येन मिवावहत्।

या इदं स्त्री पुमानकः इह स स्तुवता जनः।। 1।

यत्रैषामग्ने जनिमानि वेत्थ गुह सतामन्त्रिणां जातवेदः।

तॉस्त्वं ब्राह्मणां वावधानों जहयेषां शततहमग्नें।। 4।

अर्थात–अग्नि में डाली हुई यह हवि रोग–कृमियों को उसी प्रकार दूर बहा ले जाती है जिस प्रकार नदी पानी के झागों को बहाकर ले जाती है। यज्ञ करनें वाले स्त्री पुरूष को मंत्रोच्चारण सहित आहुतियॉ देनी चाहिए और प्रार्थना करें कि–हे प्रकाशग्नि गुप्त से गुप्त स्थानों में छिपें कृमियों को नष्ट कर आरोग्यता प्रदान करें। अतः यज्ञीय प्रक्रिया से सूक्ष्म जीवाणु भी नष्ट हो जातें है। अथर्ववेद 5/29 में भी इसी प्रकार की प्रार्थना की गयी हैं। इस प्रकार हम कह सकतें हैं कि औषधिये यज्ञ समस्त रोगों को नष्ट कर सकता है मानव को आरोग्यता प्रदान कर सुख समृद्धि आनन्द शान्ति सौभाग्य का अनुभव करता है। '' शरीरमाद्यं खलु धर्म साधनम्'' अर्थात शरीर ही सब प्रकार के धर्मो की सिद्धि का साधन है और शरीर को स्वस्थ रखनें का साधन हवन है।

इस प्रकार हमारें समग्र जीवन की सफलता का मूल साधन परोक्ष रूप से हवन यज्ञ ही है। सार तत्व यह है कि यज्ञ आरोग्यता प्रदान करता है मानव को आनन्द से जोडता है यही मानवता है जो व्यक्ति को शान्ति प्रदान करें निस्वार्थ भाव से मानव का कल्याण करे और यज्ञ परमार्थ का ही नाम है। परमार्थ ही मानवता है और मानवता ही यज्ञ है।

यज्ञ में प्रयुक्त संमिधाऐ–

ब्रह्मपुराण में संमिधाओं के सम्बन्ध में कहा है–

पलाशाऽश्वत्थन्यय ग्रोथ प्लक्षवैकय्कतोद्भवाः।

वैतसोदवरौ बिल्वश्चंदनः सरलज्ञतथा।।

शालश्च देवदारूश्च खदरश्चेति याज्ञिकाः।।

अर्थात–यज्ञ में प्रयुक्त होने वाली समिधायें पलाश ढाक; पीपल ;बरगद' पाकर प्लक्ष बैकंकत बेत गूलर बेल चंदन शाल देवदारू खैर की होनी चाहिए।

वायु पुराण में लिखा है–

पलाशफल्गुन्यग्रोथाः प्लाक्षाश्वत्थविकय्कताः।

उदुम्बरस्तथा बिल्वश्चददनों यज्ञियाश्वये।।

सरलों देवदारूश्च शालश्च खदिरस्तथा।

समिधर्थ प्रशस्ता स्युरेते वृक्षा विशेषतः।।

अर्थात–पलाश फल्गु बरगद पीपल पाकर कठेर गूलर बेल चन्दन देवदारू सरल शाल खैर समधिाओं के लिए प्रयुक्त वृक्ष हैं।

वायु पुराण में ही कहा है यदि यह समिधायें न मिलें तो अन्य समिधाये ले सकतें हैं परन्तु निम्न दोष न हो–

निवासा ये च कीटानां लताभिर्वेष्टिताश्च ये।

अयज्ञिया गर्हिताश्च बल्मीकश्च समावृताः।।

शकुनीनां निवासाश्च वर्जयेत्तान महीरूहान्।

अन्याश्चैवं विधान सर्वान यज्ञियांश्च विवर्जयेत।।

अर्थात–कीडे–मकोडें वाली लकडियो तथा जिनमें लता बेलें झाड–झंकाड लिपटें हो ; इमली कटहल आदि का समिधाओं के रूप में प्रयोग नही होना चाहिए। काटेदार वृक्ष तथा जिन वृक्षों में दीमक लगी हो पक्षी रहतें अथवा वीट करतें हों ऐसे वृक्ष भलें ही उपयुक्त वृक्ष न हो समिधाओं के रूप में प्रयुक्त न किये जाये।

याज्ञवल्क्य संहिता 1/302 में नवग्रह यज्ञ की समिधाओं का उल्लेख है–

अर्कः पलाशाः खदिरस्त्वपपामार्गोऽथ पिप्पलः।

उदुम्बरः शमी दूर्वा कुशाश्च समिधा क्रमात।।

अर्थात–सूर्य सोम मंगल बुध गुरू शनि राहु केतु के लिए क्रमशः आक मदार ' या बरगद पलाश खैर अपामार्ग चिरचिटा; पीपल गूलर शमी दूर्वा तथा कुश की ही प्रयुक्त होनी चाहिए।

पीपल के बारें में लोगों को भ्रान्ति है कि हवन में पीपल की समिधा नही होनी चाहिए जवकि यह असत्य है क्योकि भगवान श्री कृष्ण ने गीता में स्वयं कहा है–अश्वत्थोऽहं **वृक्षाणां** अर्थात वृक्षों में मै पीपल वृक्ष हॅू। इसलिए लोग पीपल को काटना हानि पहुचाना पाप समझतें है और सही भी है परन्तु यदि पीपल की सूखी एवं स्वतः ही गिरी हुई समिधायें यदि मिल जाये ंतो उन्हें यज्ञ में प्रयुक्त कर सकतें है पेड काटना समिधा तोडना वर्जित ही है।

पद्म पुराण कहता है–**यज्ञार्थेच्छेदितोऽश्वत्थः सर्वारोग्य प्रदो भवेत।**

अर्थात –यज्ञ कार्य के लिए पीपल वृक्ष काटनें से मनुष्यो को सव प्रकार का आरोग्य लाभ मिलता है परन्तु स्मरण रहे हरा वृक्ष न काटा जाये। पीपल वृक्ष न काटनें के पीछे एक तर्क यह भी है कि पीपल का वृच अधिक आक्सीजन देता है इसलिए पीपल

वृक्ष की पूजा की जाती है। परन्तु शास्त्र सूचो पेड की समिधा यज्ञ में प्रयुक्त करनें को मना नही करता है अतः विवेक से काम लें भ्रान्तियों से नही।

यज्ञ मीमांशा का मत है कि किसी पवित्र भूमि में उगे हुए शमी वृक्ष के बीच में उगे पीपल वृक्ष की डाली से अरणि बनती है उस पीपल के वृक्ष की पूर्व या उत्तर अथवा

शीर्ष कोण उपर की ओर जा रही डाल से अरणि बनाई जाती है। अर्थात पीपल वृक्ष की महत्ता यज्ञ कार्य में अधिक है।

ऋतुओं के अनुसार यज्ञ एवं सामग्री–

मौसम का मानव मन एवं व्यवहार पर पूर्ण प्रभाव पढता है जैसे जैसे मौसम बदलतें हैं मन और चित में भी परिवर्तन आतें हैं शरद ऋतु में कफ बढ जाता है ग्रीष्म ऋतु पित्त बर्षा ऋतु बात रोग बढ जातें हैं। मानव मन व तन पर इसका प्रतिकूल प्रभाव पढता है। प्रकृति के अनुसार व्यवहार आहार का प्राबधान है इसलिए हर मौसम के अनुसार आहार वनाये व बताये गयें हैं। आहार से विमुख हो जानें पर मानव का व्यवहर बदल जाता है और अनेकों प्रकार की बीमारियॉ उत्पन्न हो जाती हैं। इसलिए व्यक्ति को

मौसम के अनुसार ही चलना चाहिए।

ऋतु चक्र–

अग्रेजी कलेन्डर के अनुसार	हिन्दू कलेन्डर के अनुसार	ऋतु का नाम
जनवरी–फरवरी;मार्च लास्ट	माध–फाल्गुन	शिशिर
मार्च–अप्रैल; मई लास्ट	चैत्र–बैशाख	बसंत
मई–जून; जुलाई लास्ट	ज्येष्ठ–आषाढ	ग्रीष्म
जुलाई–अगस्त ; सितम्वर लास्ट	श्रावण–भादपद	वर्षा
सितम्वर–अक्टूवर; नवम्वर लास्ट	आश्विन–कार्तिक	शरद
नवंम्वर–दिसम्वर ; जनवरी लास्ट	मार्गशीर्ष–पौष	हेमन्त

वर्षा; शरद; हेमन्त ऋतु में सूर्य दक्षिणायन होतें हैं इस समय को विसर्गकाल भी कहतें हैं। मौसम नमी होनें से अथवा वर्षा के कारण तापमान में कमी होने से अम्ल क्षार रस में वृद्धि होती है। चन्द्रमा वलिष्ठ होने से मन मानव में नवीन चूतना संचार होता है खाया–पिया जल्द पचता है। ऐसे समय में आयुर्वेद के अनुसार चिकनाई

युक्त तला मीठे नमकीन खट्टे पदार्थ खानें का आदेश हैं इस समय ऐसा भोजन यदि अति में न खाया जाये तो नुकशान नही करता है। परन्तु ऐसा भोजन गर्मी में मना है क्योकि

मौसम वदल जानें के कारण शरीर की शक्ति में कमी आ जाती है। और ऐसा भोजन जहर हो जाता है।

शेष ऋतुओं में सादा सुपाच्य भोजन खाने पर बल दिया गया है जिससे शरीर की शक्ति वनी रहे।

ऋतु के अनुसार समधिाऍं–

मौसम के अनुसार ही समिधाऍं प्रयुक्त कीना चाहिए। जो निम्नवत् हैं–

ऋतु का नाम	समिधा का नाम
शिशिर	बरगद या गूलर वृक्ष की लकडी
बसंत	शमी !!
ग्रीष्म	पीपल !!
वर्षा	बिल्व ढाक !!
शरद	आम या पाकर !!
हेमन्त	खैर !!

मौसम के अनुसार यज्ञ सामग्री–

शिशिर ऋतु

चरक सेहिता–सुश्रुत एवं अष्टांग सग्रह में शिशिर ऋतु का वर्णन करतें हुए कहा है–

शिशिरे शीतमधिकं मेधमारुतः वर्षजम्।

रौक्ष्यं चादानजं तस्मात्कार्यः पूर्वोधिकं विधिः।।

अर्थात–हेमंत ऋतु की अपेक्षा शिशिर ऋतु में बादल वर्षा एवं तेज हवा के कारण सर्दी अधिक बढ जाती है शीतल–लहर का प्रकोप होता है। वातावरण में रुखापन आ जाता है जिसका प्रभाव पडता है वायु प्रकुपित हो जाती है जिस कारण खॉसी; जुकाम; वात–व्याधियॉ ;शरीर में दर्द एवं निमोनिया का प्रकोप वढ जाता है। इन प्रकोपो से बचनें के लिए यज्ञोपोचार अपनाना ही श्रेष्ठ उपाय है।

शिशिर ऋतु की सामग्री–

1–चिरायता	2–शतावर	3–गिलोय
4–इलायची	5– मुलहठी	6– दारूहल्दी
7–छुआरा	8–अखरोट	9–मुनक्का
10–चिरौजी	11–कपूरकचरी	12– मोचरस
13– जटामासी	14– गुग्गल	15– श्वेत चन्दन
16– रक्त चन्दन	17– गोरखमुण्डी	18– संभालू के बीज

सबकी सम मात्रा में काले तिल तुलसी बीज तुबंरू दुगनी मात्रा में मिला लें।

विधि–सवको कूट पीस कर उसमें गुड या बूरा गाय का धी मिला कर गायत्री मंत्र की 108 आहुतियष्यें से यज्ञ करें रोगी के द्धारा ही यज्ञ कराया जाये।

वसंत ऋतु

शीत–ऋतु का समापन एवं ग्रीष्म ऋतु के आगमन का मध्य काल है–बसंत–ऋतु। जिसमें मौसम बार–बार बदलता है सर्दी–गर्मी का मिलाजुला असर होता है। प्राणी जन्तु तन्तु में नवीन उर्जा का संचार होता है।

भावप्रकाश पूर्वखण्ड प्रकरण 6/33 में कहा है–

वर्षासु शिशिरे वायुः पित्तं शरदि उष्णके।

वसंते तु कफः कुप्येदेषा प्रकृतिरार्त्तवी।।

अर्थात–वर्षा और शिशिर ऋतु में वात का प्रकोप होता है। शरद और ग्रीष्म ऋतु में पित्त प्रकोप होता है और बसंत ऋतु में कफ को प्रकोप होता है। मौसम अस्थिर होता है जठराग्नि मंद हो जाती है। बुखार सॉसी नजला जुकाम टान्सिल आदि रोग उत्पन्न हो जातें हैं। ऋतु के अनुसार भोजन एवं यज्ञोपचार से मानव को नवीन शक्ति प्राप्त होती है।

वसंत ऋतु की सामग्री–

1–श्वेत चन्दन	2–रक्त चन्दन	3–अगर
4–तगर	5–वच	6– इन्द्र जौ
7– तालीसपत्रं	6– बनकचूर	9– वासा
10– शंखपुष्पी	11– सुगन्ध वाला	12–मंजीष्ठ
13– कंटकारी	14–गोखरू	15–पटोलपत्र
16–देवदार	17–दालचीनी	18–नीमपत्र
19– हाउबेर	20–कुलंजन	21– जायफल

सवकी सम मात्रा ले कूटपीस कर यज्ञ कार्य में प्रयुक्त करें आहुतियॉ सूर्य गायत्री मंत्र की हो।

ग्रीष्म ऋतु

अप्रैल से प्रारम्भ होकर जून –जुलाई का मध्य समय ग्रीष्म ऋतु का है सूर्य अपनी पूर्ण प्रचंड अवस्था में होता है। दिन वडे तथा रात्रि छोटी होती है। भावप्रकाश 4 / 324 के अनुसार–

ग्रीष्मोरूक्षाऽतिकटुकः पित्तकृत कफनाशनः!

अर्थात–ग्रीष्म ऋतु रूक्ष पदार्थो में तीक्ष्णता उत्पन्न करनें वाली; पित्तकारक एवं कफनाशक है। इस समय में लू लगना; हैजा; स्नायुतंत्र की कमजोरी वमन;अतिसार; विषम ज्वर ; नेत्र–शोध खसरा धमौरियॉ एवं त्वचा रोग जैसी अनेकों बीमारियॉ उत्पन्न हो जाती है जिनका शमन यज्ञोपचार द्धारा संभंव है।

ग्रीष्म ऋतु की सामग्री–

1–अगर	2–तगर	3– वच
4–गिलोय	5–जटामासी	6–दारूहल्दी
7–गुग्गल	8–मंजीष्ठ	9–श्वेत चन्दन
10–रक्त चन्दन	11–गंध बिरोजा	12–देवदार
13–तुलसी	14–ऑवला	15–कपूर
16–लौग	17–सुगन्धवाला	18–शतावर
19–दालचीनी	20–खस	21–शिलारस
22–गिलोय		23–नैपाली
24–धनिया–तुबंरू		

25–शाल 26–नागरमोथा 27–कुश की जड

28–लाख 29–भोजपत्र 30–गुंड

31–गौ धृत

सवकी समान मात्रा जेकर यज्ञ में प्रयुक्त करें।

वर्षा ऋतु

इस ऋतु का समय श्रावण–भादौ का है। इस ऋतु में जल के अम्ल पिपाक के कारण पित्त का संचय तथा अग्निमंदता के कारण कफ का संचय होता है। विषाणु वढ जातें हैं जिस कारण फोडा–फुंसी कालरा ऑव–पेचिश पीलिया मलेरिया टायफाइड कीट–दंश जैसे रोग उत्पन्न हो जातें हैं जिनका समाधान में यज्ञोपचार पद्धति सहायक सिद्ध होती हैं।

वर्षा ऋतु की सामग्री–

1–चिरायता 2–कुटज 3–कचूर

4–कूठ 5–गोरखमुंडी 6–तगर

7–इन्द्र जौ 8–मकोय 9–शेखपुख्पी

10–चीड 11–कुश की जड 12–इलायची लाल

13–नीम के सूखे पत्ते 14–जायफल 15–तेजपत्ता

16–पीली सरसों 17–गुग्गल 18–छुआरा

19–मखानें 20–देवदार 21–राल

22–विष्णुक्रांता 23–ब्राह्मी 24–नारियल गिरी

25–मोचरस 26–कपूर 27–बेलपत्र

28–नागकेशर 29–तुलसी के बीज 30–गुड

31—गौधृत	32—जटामासी	33—कपूर

सवकी समान मात्रा लेकर यज्ञ में प्रयुक्त करें।

शरद ऋतु

इस ऋतु का प्रारम्भ कार्तिक मास में होता है।16 सितंम्वर से 15 नवम्वर तक का समय शरद ऋतु के विसर्गकाल मध्य होता है। मौसम साफ मनोहारी होता हैं। बलतें मौसम एवं अनुचित आहार–विहार के कारण अनेको रोगों का संभावना रहती है। यज्ञोपचार के द्वारा जिनका निदान संभव है।

शरद ऋतु की सामग्री–

1—पत्रक	2—इन्द्र जौ	3—सहदेवी
4—खस	5—चिरायता	6—श्वेत चन्दन
7—रक्त चन्दन	8—ताल मखाना	9—धान की खील
10—भारंगी	11—कचूर	12—गूलर की छाल
13—कपूर	14—केसर	15—किसमिस
16—गुग्गल	17—अगर	18—बिदारीकंद
19—नागरमोथा	20—नीम के पत्ते	21—आम के पत्ते
22—शीतलचीनी	23—दालचीनी	24—पीली सरसों
25—गिलोय	26—अपराजिता	27—मुनक्का
28—गुड	29—गौधृत	30—अश्वगंध

हेमंत ऋतु

नवम्वर जनवरी के मध्य का समय हेमतं–ऋतु का होता है। खेत–खलिहान नवीन धन–धान्यो से भरे होते है। इस ऋतु को स्वस्थ्य संवर्धन के लिए श्रेष्ठ माना जाता

है। आयुर्वेदाचार्यो के अनुसार–हेमंत ऋतु में पित्त का शमन होता है कफ का संचय और वायु का प्रकोप होता है। जिस कारण वात–व्याधियॉ जोडो का दर्द; स्वास–कास पक्षाधात जैसे अनेकों रोग उत्पन्न हो जातें हैं जिनका शमन यज्ञोपचार द्धारा आवश्यक हो जाता है।

हेमंत ऋतु की सामग्री–

1–अगर	2–तगर	3– गिलोय
4–जटामासी	5–रास्ना	6–कायफल
7–कूठ	8–कौच के बीज	9–विजयसार
10–गोखरू	11–सौफ	12–भारंगी
13–पटोलपत्र	14–श्वेत चन्दन	15–रक्त चन्दन
16–पुष्करमूल	17–मूसली काली	18–तुबंरू
19–केसर	20–अखरोट गिरी	21–गुग्गल
22–मुनक्का	23–बला	24–मुलहठी
25–बादाम	26–छुआरा	27–दालचीनी
28–पित्तापापडा	29–जावित्री	30–गौधृत
31–गुड	32–सौफ	33–तिल
34–जौ		

<u>यज्ञ द्वारा रोगोपचार</u>

यज्ञ एक विज्ञान है जिसके द्वारा असाध्य रोगों को भी ठीक किया जा सकता है। यज्ञ के 3 विभाग हैं–1–मंत्र 2–सामग्री 3–साधक की भावना।

यज्ञ में प्रयुक्त सामग्री का बडा महत्व है। सामग्री मानव के गुणों के आधार पर प्रयुक्त की जाती है। शास्त्रों में तीन गुण बताएँ हैं। जिनकी सामग्री मंत्र के लिए माला तथा आसन भी अलग–अलग है। जो निम्नवत् है–

1–सतोगुण प्रधान यज्ञ

माला–तुलसी पुष्प–सफेद

पात्र–तॉवा आसन–कुश

दीपक– गौ–धृत मुख–पूर्व की ओर

तिलक–चंदन हवन में समिधा–पीपल या गुलर

हवन सामग्री–

1–श्वेत चंदन; 2– अगर 3– ; छोटी इलायची

4–शंख पुष्पी 5– शतावरी ;6– लौग; 7– ब्राही 8– खस 8–शीतल चीनी 9– ऑवला 10–इन्द्र जौ; 11–वंशलोचन; 12–गिलोय 13–वच; 14– मुलहठी; 15–कमल केसर; 16–बड की जटाएँ; 17–नारियल; 18–बादाम; 19–मखानें ;20–मिश्री आदि।

रजोगुण प्रधान यज्ञ–

माला–चन्दन पुष्प–पीले पात्र–कॉसा

आसन–सूत दीपक–भैंस का धी मुख–उत्तर की ओर तिलक–रोली सामिधा–आम; ढाक शीशम

<u>हवन सामग्री</u>–

1–देवदारु; 2–बडी इलायची 3– केसर 4–; छार–छविला; 5–पुनर्नवा 6–जीवन्ती 7–कपूर 8–रास्ना; 9–नागरमोथा 10–तालमखाना; 11–मोचरस; 12–सौफ; 13–चित्रक; 14–दालचीनी;

15– छुआरा;16–किशमिश ;17– चावल ; 18–खॉड आदि।

तमोगुण प्रधान यज्ञ–

माला–रुद्राश पुष्प–हरें या गहरे लाल तात्र–लोहा आसन–ऊन दीपक–बकरी का धी

मुख –पश्चिम में तिलक–भस्म का समिधा– बेल; छौंकर करील ।

<u>हवन सामग्री–</u>

1–रक्त चन्दन; 2–तगर ;3– असगंध; 4–जायफल; 5–नाग–केसर; 6–पीपल वडी; 7–कुटकी 8– चिरायता; 9–अपामार्ग; 10–काकडा–मिश्री; 11–कुलंजन; 12–मूसली–स्याह;13– काकजंधा; 14– भारंगी;15– अकरकरा; 16–मेथी के बीज; 17– पिस्ता; 18– चिरौजी; 19–तिल 20–उरद 21– गुड आदि।

विधि–जिस उद्देश्य से हवन करना हो उसी प्रकार की सामग्री प्रयुक्त करें और हवन–विधि से गायत्री मंत्र के साथ सूर्य गायत्री मंत्र की 24–24 आहुतियॉ दें। और नित्य सत्संग मानवता के कार्य करतें हैं।

प्रयोग–परिक्षण–

हमारें द्धारा किये गए अलग अलग प्रयोगों मे किसी भी रोग में मौसम व गुण के अनुसार नित्य गायत्री मंत्र व सूर्य गायत्री मंत्र से यज्ञ किया गया और रोगी को सत्संग भजन व मानवता के पाठ जैसे सेवा करना गरीबों की मदद करना वेजुबानों का संरक्षण पोषण करना आदि का शिक्षण दिया गया इसका परिणाम यह हुआा कि रोगी लगभग 6 माह में पूर्ण स्वस्थ हो गया। यज्ञीय वातावरण में सकारात्मक उर्जा एवं मानवता के संरक्षण में रचनात्मक शक्ति प्राप्त कर रोगी पुनः स्वस्थ अनुभव करनें लगा।

अनेको ऐंसी माताऍ जो अपनें परिवार द्धारा तिरस्कृत थी जिनका मनोवल टूट गया था वे भी यज्ञीय वातावरण में स्वस्थ है शान्तिकुज हरिद्धार इसका जीता जागता प्रमाण है जहॉ नित्य यज्ञ एवं सत्संग तथा मानवता के अनेकों कार्य होतें हैं। गायत्री शक्ति पीठ धाम ऑवला बरेली पर यज्ञ द्धारा तथा मानवता के कार्ये के द्धारा अनेको रोगों का निदान किया गया है जिनका संक्षिप्त साक्षात्कार प्रस्तुत करेगें।

यज्ञोपचार के अनुभूत प्रयोग

यह अटूट सत्य है यज्ञ से हर कार्य संभव है तथा हर समस्या का समाधान है। मैं यज्ञ के द्वारा प्रयोग एवं उपचार कई वर्षो से कर रहा हूॅ जव हमने गायत्री जीवन का आधार लिखी उसी समय वर्ष 2001 से यज्ञोपैथी पर कार्य प्रारम्भ कर दिया हमारा प्रयास था यज्ञ के द्वारा प्रयोगों को परखा जाये। हमनें असंख्य व्यक्तियों पर प्रयोग–उपयोग किया। परिणाम अच्छे आयें। अगले पृष्ठो में हम उन व्यक्यिों के परिणाम के बारें में भी बतायेगें; परन्तु यहॉ हमारा विषय उन प्रयोगों का है जिनका वर्षो प्रयोग करनें के बाद परिणाम सुखद रहा है।

प्रयोग की विधि वही रही सर्व प्रथम गायत्री यज्ञ अथवा हवन करके औषधि प्रयोग किया गया। औषधि प्रयोग के बारें में कई स्थानों पर हमने बताया है।

कई ऐसे गम्भीर रोग थे जिनका लम्वे समय तक यज्ञोपचार किया गया अन्ततः सुखद परिणाम सामने आये। यहॉ हम पूर्ण विधि सामग्री एवं व्यवस्था को वर्णित कर रहें हैं।

विधि–विघान–नवरात्रि के प्रथम दिवस कलश का स्थापन कर गेंहुॅ के बीजों को कलश के चारों ओर गायत्री मंत्र पढकर बो दें। सम्पूर्ण नवरात्रि गायत्री मंत्र की 33 मालाओं का जाप करें। जाप के समय दीपक जला कर रखें। साधना के बाद एक दूसरें कलश में रखे जल को सूर्य भगवान को अर्पण कर शेष जल कलश के पास बोयें गेंहुॅ में 3 बार गायत्री मंत्र पढकर डाल दें। यह क्रम नवरात्रि भर करें। नवमी को अनुष्ठान पूर्ण करें। कन्या भोज एवं गौ ग्रास देकर प्रथम दिवस बोयें हुए बीज कलश के आस–पास धास के रूप में उग आयें होगें। उन्हें गेंहुॅ का ज्वारा अर्थात ग्रीन व्लड ''हरा लहु'' कहतें हैं। इनका रस निकाल कर अनेकों रोगों में काम लाया जा सकता है जैसे–मूत्राश्य की पथरी; ह्रदय रोग; डायविटीज; दंत रोग; पीलिया; लकवा; दमा; पाचन की दुर्वलता; अपच; जोडों में दर्द; बिटामिन की कमी; नेत्रो की दुर्वलता; धाव; सूजन; गठिया; संधि–वात; त्वचा रोग; एलर्जी आदि रागों में विभिन्न योग के साथ इसका प्रयोग किया जा सकता है।

मूत्राश्य की पथरी–ज्वारें के रस को नीवू पत्तरचटा के रस के साथ दे।

अपच;में–गुड तथा हींग के साथ दे।

ह्रदय रोग में–अर्जुन की छाल के रस के साथ दें।

डायबिटीज में–सादा रस दें।

दत रोग में–रस को हल्दी काले नमक के साथ दंत मंजन करें।

पीलिया में–मूली रस के साथ दे।

लकवा में–तिल–तेल अथवा सरसों के तेल सोंठ काली मिर्च तेजपत्ता चूर्ण में मिलाकर मालिश करे।

दमा में– लौग रस के साथ निहार मुँह दें।

पाचन की दुर्बलता में–गुड त्रिफला के साथ दे।

जोडों में दर्द–सोंठ काली मिर्च जायफल के चूर्ण के साथ दें तथा मालिश करें

बिटामिन की कमी–नीवूँ रस ;एलोवेरा रस अथवा ऑवला रस के साथ दे।

नेत्रो की दुर्बलता– एलोवेरा एवं ऑवला रस के साथ सेवन करें।

धाव एवं सूजन में–रस को हल्के हाथ से लगाये। फिर हल्दी को गौ धृत में मिलाकर लगा दें।

गठिया में–नित्य रस का सेवन तथा तिल तेल में चिनिया लहसुन जला कर मालिश करें।

संधि–वात में–रस का सेवन तथा सोंठ कालीमिर्च हल्दी तुलसी का काढा नित्य पियें।

त्वचा रोगों में–नित्य ज्वारें का रस ही लेना है।

एलर्जी में–ज्वारें का रस तथा एलोवेरा रस का सेवन तथा एलोवेरा गूदा को शरीर पर लगाकर स्नान करना है सावुन का प्रयोग न करे।

चेहरें का रंग साफ करनें के लिए—ज्वारें के रस में नीबॅू टमाटर बेकन सोडा और एलोबेरा मिलाकर चेहरें पर लगायें।

पथरी में—धनिया और जीरा उवालकर उसमें ज्वारें का रस और नीवॅू नचोडकर सेवन करें। स्मरण रहे— सर्व प्रथम धनिया और जीरा अच्छी तरह से उवाल लेना है तव नीबॅू नचोडना है। ओर सीध्रता के साथ पी लेना है।

कैल्शियम की कमी में—नीबॅू छिलकों पीसकर गर्म पानी में ज्वारें का रस मिलाकर पियें।

रक्त विकार एवं अतिरक्त स्राव में—नागकेशर को मट्ठा अथवा ठंडें दूध में पिलानें से इस रोग से मुक्ति मिलती है।

शरीर में कही भी गॉठ होनें पर—शीशम के पत्ते कालीमिर्च ज्वारें के रस में पीसकर गॉठ पर लेप करनें से सीध्र गॉठ बैठ जाती है।

यज्ञ द्वारा वातावरण— संशोधन संवर्धन—परिशोधन

यज्ञ एक विज्ञान है जिसका भारतीय संस्कृति में बडा महत्व है यज्ञ के द्वारा सभी कार्य संभंव हैं। वातावरण में छायी कलुषता का निवारण प्रकृति संर्वधन संरक्षण यज्ञ के द्वारा होता रहा है। प्राचीन समय में ऋषि गण नित्य यज्ञ करतें थे। उसका समय राक्षस प्रवृत्ति वाले यज्ञ में बॉधा डालते थे । संभव है यह राक्षस कोई और नही बल्कि सक्रामक रोग ही रहे हो। समय—समय पर अनेको राक्षसों के द्वारा प्रकृति एवं संत—जनों को आहत करनें के प्रसंग मिलतें हैं। जिनका निवारण यज्ञ के द्वारा ही हुआ है —ऐसे प्रमाण भी है। अनिष्ट का निवारण एवं अभिष्ट की सिद्धि यज्ञ के द्वारा संभव है। जव राम—रावण का युद्ध हुआ उस समय भी राम व रावण द्वारा यज्ञ किया।

हमारे सोलह संस्कारों में यज्ञ सर्व प्रथम किया जाता है जन्म से पूर्व एवं बाद में दसूठन संस्कार से लेकर मरणोत्तर संस्कार तक यज्ञ का साथ रहता है। हमारी संस्कृति यह शिक्षा देती है कि मानव का जीवन यज्ञ—मय अर्थात परमार्थ—मय है। मानव जीवन का उद्देश्य परोपकार ही है स्वयं के लिए जीना नही वरन् विश्व प्रकृति को परिवार मानकर जीना सवको साथ लेकर चलना यज्ञ ही है। जिस प्रकार

से अग्नि के सम्पर्क में आनें वाली हर चीज यज्ञ मय हो जाती है अग्नि अपनें लिए वचाकर कुछ नही रखती; सवको बगैर भेद–भाव के बराबर–बराबर बॉट देती है उसी तरह से मानव को ''बसुदैव कुटुम्बकम्'' की भावना से परमार्थ मय जीवन जीना चाहिए।

जव से मानव ने यज्ञ–संस्कृति अर्थात परमार्थ भाव को छोडा तभी से उसके ऊपर संकट के बादल छायें। अनेको प्रकार के रोग–शत्रु संकट बडे। और आज मनुष्य के अन्दर प्रेम; सामजंस्य करुणा' आनन्द; शान्ति–सव नष्ट हो गये। आज व्यक्ति पशुवत् जीवन जी रहा है–और दूसरों के साथ भी पशुवत् व्यवहार कर रहा है।

प्राचीन समय में धर में यज्ञ एवं गौ सेवा नित्य होती थी; परन्तु खेद! आज दोनों को ही मानव भूल गया। गाय को धर से गली–गली धक्के खानें को निकाल दिया; इसलिए मानव के जीवन में अनेको कष्ट बीमारियॅा आ गयी; और भविष्य में भी आयेगीं जव तक मनुष्य अपनी मूल संस्कृति–सभ्यता की ओर नही लौटेगा तव तक वह इन झंझावतों में फसता रहेगा–भटकता रहेगा।

आवश्यकता –व्यक्तित्व परिष्कार एवं आत्म सुधार की है विचार–परिवर्तन की है। गुरुदेव पं0श्री राम शर्मा आचार्य जी ने मानव को 19वी शताव्दी में जागरुक कर दिया था उनकी कही बात वर्तमान समय में सही सिद्ध हो रही है। वे जानतें थे आने वाला समय खराव है इसलिए उन्होने यज्ञ एवं गौ–सेवा को महत्व दिया। आत्म–सुधार परिष्कार की बात कही। इससे कम में व्यक्ति सुधार एवं प्रकृति–संबर्धन संभव नही है।

हवन सामग्री–

1–अगर 2–तगर 3–गिलोय 4–जटामासी 5–ऑवला

7–अनंतमूल 8–अपामार्ग 9–इन्द्रजौ 10–आम के सूखे पत्ते

11–बडी कटेरी 12–चमेली या चंपा का पुष्प 13–चन्दन का बुरादा

14–तुलसी की लकडी 15–देवदार का बुरादा 16–बिल्वगिरी 17–मौलश्री
18–लोवान 19–सरसों 20–सर्ज 21–ममीरी 22–मंजीष्ठ 23–सुपारी

24—शालगोंद 25—लोध्र 26—वच 27—दूर्वा 28—तेजपत्ता 29—छुआरा 30—गुग्गल 31—नीम की सूखी पत्ती व छाल

32—किशमिश 33—कूठ 34—गंधक 35—तज 36—दवना 37—निर्गुणी 38—केशर 39—गंधतृण 40—जायफल 41—बला 42—लाख 43—सिरस की छाल 44—प्रियंगु 45—बाकुचि 46—हरीतकी 47—मरुआ तुलसी 48—लौगं 49—राल 50—नागरमोथा 51—दालचीनी 52—तालीसपत्र 53—नेर—पत्ती 54—हल्दी 55—श्वेत चन्दन 56—रक्त चन्दन 57—पुनर्नवा 58—तिल 59—मखाना

विधि—समस्त औषधि को कूट पीस लें तत्पश्चात् उसमें गौधृत गुड या वूरा तथा शहद मिला कर गायत्री; सूर्य गायत्री मंत्र.; महामृत्युंजय मंत्र तथा दुर्गा अर्गलास्त्रोत मंत्र से आहुतियॉ दें। प्रर्थना करें—वातावरण शुद्ध हो यह आहुतियॉ सभी का कल्याण करें तथा जन्तु तंतु जीव—जगत सुरक्षित संरक्षित रहे।

यज्ञ और मानवता के संदर्भ में शोध–

यह विषय गम्भीर है यज्ञ परोपकार का कार्य है और मानवता व्यक्ति का आवश्यक आभूषण है जिसके अभाव में मानव के अस्तित्व की कल्पना नही की जा सकती है। कारण यह है कि प्रकृति भी परोपकार की भावना से कार्य कर रही है। वृक्ष स्वयं अपना फल नही खातें हैं और नदी स्वयं अपना जल नही पीती है बल्कि परोपकार के निमित्त अथवा मानवता हेतु अपना योगदान देकार सवको पोषित करती है। परन्तु यह भी सत्य है कि अकेलें प्रकृति कुछ नही कर सकती है यदि व्यक्ति के अन्दर भाव न हो ळावना न हो संवेदना न हो करूणा न हो तो मानवता मानव मन में प्रकट ही नही हो सकती है। आस्तिक व्यक्ति मे सदगुणों के कारण ही भाव–संवेदना होती है जबकि नास्तिक व्यक्ति निष्छुर करूणा हीन हो सकता है। निरन्तर यज्ञ एवं मानवता के पाठ को अध्ययन व सेवन कर नास्तिक भी आस्तिक हो सकता है यह शोध से सिद्ध हुआ है।

हमारें शोध के तीन चरण है।

1–प्रथम वर्ग –जिन्हें नित्य यज्ञोपचार दिया गया।

2–द्धितीय वर्ग–जिन्हें केवल मानवता का ही पाठ पढाया गया।

3–तृतीय वर्ग– जिन्हें यज्ञ और मानवता का नित्य सेवन कराया गया।

अवधि–तीन माह

प्रयोग 1–तीनों वर्ग में 20–20 व्यक्ति लिए गयें जिन्हें नित्य यज्ञ 30 मिनट कराया। क्रमशः तानों वर्गो के साधको पर 30–30 मिनट व्यवस्था के अन्तर्गत यज्ञ और मानवता विषय सत्संग सेवन कराया गया। प्रथम माह सुवह शाम द्धितीय माह केवल सुवह और तृतीय माह केवल शाम को प्रयोग–अभ्यास कराया गया।

प्रयोग 2– द्धितीय प्रयोग में तीनों वर्गो को नित्य सुवह शाम 30–30 मिनट यज्ञ और सत्संग व्यवस्था के अन्तर्गत कराया।

परिणाम'–प्रथम प्रयोग में प्रथम वर्ग में परिणाम 40 प्रतिशत द्धितीय वर्ग में 30 प्रतिशत और तृतीय वर्ग में 50 प्रतिशत परिणाम सार्थक रहें जबकि द्धितीय प्रयोग में परिणाम प्रथम पर्ग में 50 प्रतिशत द्धितीय वर्ग में 40 प्रतिशत और तृतीय वर्ग में 85 प्रतिशत परिणाम अच्छें आयें ।

शोध में पाया गया कि जव धर्म और मानवता मिल कर कार्य करतें हैं तो परिणाम सीध्रगामी और दीध्रगामी होते हैं। यज्ञ के साथ मानवता के गुणों के कारण व्यक्ति पर तत्काल सार्थक प्रभाव पडता है।

अन्य रोगों में यज्ञ और मानवता का प्रयोग–

मानसिक रोगों में

मानसिक उन्माद–

यह मानसिक बीमारी है जिसे मैलनकली या मालीखोलिया कहतें हैं। एलोपैथी में इसे मैडनेस अथवा मेनिया के नाम से जाना जाता है। आयुर्वेद में इसे पागलपन के नाम से पुकारतें हैं।

निराशा; भय अत्यधिक काम–वासना; नशीले पदार्थो का सेवन मिर्गी रोग ; स्मैक गॉजा भॉग ब्राउनसुगर का सेवन; ईर्ष्या ;वार–वार चोट लगना एवं अत्यधिक स्वास्थ्य खराव होनें के कारण से यह रोग उत्पन्न होता है।

पहचान–लगातार सिर दर्द होना अथवा प्रलाप करना ; शोक या प्रसन्नता ईर्ष्या या निंदा अशिक्षा अथवा पथभ्रष्ट होना; आत्म हत्या की कोशिश करना आदि । ऐसा प्राणी व्यर्थ में इधर–उधर भटकता है।

यज्ञ एवं मानवता विषयक उपचार–

प्रयोग 1–दस वर्ग में ऐसे 10 व्यक्तियों पर प्रयोग किया गया जो बहुत चिडचिडें थे बात बात पर क्रोध करतें थे लडतें थे उन्हें नित्य यज्ञ एवं परोपकार सेवा के कार्य निरन्तर 6 माह करायें गये। 6 माह के बाद पाया गया 10 में से 7 व्यक्ति पूर्णतया ठीक हो गये।

प्रयोग 2– इस वर्ग में मानसिक अवसाद ग्रस्त रोगियों को गौ सेवा एवं बृद्ध माताओं की सेवा में रखा गया निरन्तर 1 वर्ष की सेवा के बाद पाया गया लगभग 9 रोगी स्वस्थ हो गयें।

कैंसर रोग का यज्ञोपचार–

कैंसर प्राणधातक बीमारी है एलोपैथी में कैमोथेरेपी ही एक मात्र उपचार माना जाता है। कैंसर की 1 से 10 बार कोशिकाएॅ बनती हैं जिस कारण रोगी बार–बार गम्भीर रूप से बीमार हो जाता है। भोजन में चीनी की अधिक मात्रा भी कैंसर को बढाती है। दूध के अपच होने की स्थिति में भी कैंसर उत्पन्न हो जाता है। मनोविकृतियॉ भी कैंसर का एक कारण होती हैं।

उपचार एवं मानवता– रोगी को निरन्तर 1 वर्ष तक यज्ञोपचार विशेष हवन सामग्री द्वारा कराया गया प्रातः गौमूत्र का सेवन कराया गया। अवधि में उसें नित्य ध्यान साधना गौ सेवा एवं सत्संग का अभ्यास कराया गया। रोगी नित्य सत् ससहित्य जैसे रामायण गीता वेद आदि

का अध्ययन करता रहा और जन समुदाय के मध्य जाकर सेवा मार्ग दर्शन के कार्य भी करता रहा। शाम को नीद अच्छी आयी और एक वर्ष बाद रोग से मुक्ति मिली। मुख्य तथ्य यह है कि रोगी अपनें कार्य में व्यस्त हो गया उसे रोग के चिन्तन से अच्छे कार्य के चिन्तन लगनें से उसकी नकारात्मक उर्जा सकारात्मक उर्जा में परिवर्तित होनें के कारण वह स्वस्थ हो ता चला गया। वास्तव मानवता के कार्यो से स्वयं को संतुष्टि मिलती है और आनन्द भी।

वात–व्याधि–निवारण यज्ञोपचार

महर्षि चरक के अनुसार–अशीतिर्वात–अर्थात–वात विकार 80 प्रकार के होतें हैं। हमारा शरीर पॉच तत्व पॉच ज्ञानेद्रियॉ पॉच कर्मन्द्रियॉ पॉच प्प्रण ; चार आवेग एवं 3 गुणों से मिल कर वना है। जिनमें पॉच प्राण–1–प्राण; 2–उदान;3–समान 4–व्यान 5–अपान हैं। इनके कुपित होने से अनेको प्रकार के रोग उत्पन्न हो जातें हैं। अधिक तला–जला भुना चटपटा कसैला कडुवा भोजन करनें से प्राण में वायु विकृत हो जाती है अनेको पेट सम्बन्धी समस्याऍ पैदा हो जाती है।

आयुर्वेदाचार्यो के मतानुसार वात–व्याधियॉ कई तरह की होती है जैसे–

1–कटि स्नायुशूल या गृधसी ''साइटिका''

2–आमवात या संधिशोध ''रिह्यूमेटाइड आर्थ्राइटिस''

3–संधिवात या जोडों का दर्द ''आस्टिओ आर्थ्राइटिस''

4–धुटनों का दर्द ''सनोवाइटिस आफनी''

5–गठिया वात या ''गाउट''

6–चेहरे का लकवा या अर्दित वात ''फेशियल पैरालिसिस''

7–पक्षाधात या फालिज ''हेमिप्लेजिआ''

8–अधरांगधात ''पैराप्लेजिआ''

साइटिका का यज्ञोपचार–

इसे कमर; कूल्हे; जॉध या पंजें का दर्द ;लगडी दर्द वायुपीडा कुलंग दर्द आदि नामो से जाना जाता है। इसमें रीढ् की हड्डियों की कशेरूकाऍ खिसक जाती है जिसे स्लिप–डिस्क कहतें हैं। इस रोग में अथाह दर्द होता है। यज्ञोपचार में निम्न उपाय हैं–

यज्ञोपचार हेतु हवन सामग्री–

1–निर्गुडी 2–चित्रक 3–ग्वारपाठे की जड 4–गिलोय 5–सलई गोद

6–सलई की छाल 7–पुनर्नवा 8–अश्वगंधा 9–नागरमोथा

10–मुलहठी 11–हरसिंगार के पत्ते 12–रास्ना 13–सहजन की छाल

14–जटामासी 15–मेथी के बीज 16–दशमूल–सरिवन ;पिठवन ;छोटी कटेरी; बडी कठेरी ;गोक्षरू ;वेल; सोनापाठा; अग्निमंथ; गंभारी' और पाडल की छाल आतें हैं।

17–केवाकंद 18–धमासा 19–बकायन की आन्तरिक छाल 20–खरैटी

21–पुष्करमूल 22–कायफल 23–विधारा 24–देवदार 25–सोंठ 26–मेढासिंगी 27–एरंड की जड 28–काली हल्दी 29–गुग्गल 30–तगर 31–ऊॅट कटारा की जह 32–अमलतास फल का गूदा 33–अखरोट की छाल 34–बिदारी कंद 35–तेजपत्ता

यज्ञोपचार एवं मानवता–

उपरोक्त औषधि की सम मात्रा लेकर कूटपीस कर दो भागों में कर लें एक भाग में गौधृत गुड मिलाकर गायत्री मंत्र तथा सूर्य गायत्री मंत्र की 24–24 आहुतियों से नित्य यज्ञ कराया गया दूसरे भाग की औषधि का सेवन शहद या गौधृत से दिन में दो वार कराया गया पथ्य–अपथ्य का पालन कराया गया इस अवधि में रोगी को प्राणायाम गौ सेवा तथा परोपकार परक कार्य करनें का क्रम अपनाया गया। यह प्रयोग दो वर्ग के व्यक्तियों पर किया।

प्रथम वर्ग–आयु 31 से 51 वर्ष

द्धितीया वर्ग–आयु 55 से 95 वर्ष

दोनों वर्गो पर यज्ञोपचार 3 वर्ष उपरोक्त विधि द्धारा कराया गया।

परिणाम–प्रथम वर्ग के सभी रोगी स्वस्थ हो गयो परन्तु द्धितीय वर्ग के लगभग 70 प्रतिशत रोगी स्वस्थ हुए 15 प्रतिशत रोगियों को आशिंक लाभ हुआ शेष रोगियों ने राहत का अनुभव किया।

ह्रदय रोग का यज्ञोपचार एवं मानवता

सुश्रुत संहिता उत्तरतंत्र–43 में ह्रदय रोग के बारें में लिखा है–

दूषयित्वारसं दोषा विगुणा ह्रदयं गताः।

कुर्वन्ति ह्रदये बाधां ह्रदरोगं तं प्रचक्षते।।

अर्थात–जब प्रकुपित कफ पित्त बात आदि दोष रस रक्त को दूषित कर ह्रदय में पहॅुच कर ह्रदय के कार्य में ब्यबधान उत्पन्न करतें हैं तो उसे ह्रदय रोग कहतें हैं। इसके कारण का उल्लेख चरक संहिता में मिलता है–

अत्युष्ण गुर्वत्र कषाय तिक्त श्रमाधिधाताध्यसनप्रसङ्गैः।।

सञ्चिन्तत्रोर्वेगाविधारणैश्च ह्रदामयः पञ्चविधः प्रदिष्टः।।

अर्थात–अत्यधिक ठंडे–गर्म प्रकृति वाले पदार्थ ; अत्यन्त भारी पदार्थ कषायरस प्रधान एवं तीखे रस प्रधान भोज्य पदार्थो का निरन्तर सेवन करनें से ह्रदय प्रदेश में आधात लगने से ; अध्यसन अर्थात अजीर्ण रहने पर भी भोजन करने से ; अत्यधिक चिंता एवं तनावग्रस्त रहनें से ; भयभीत रहने से; मल–मूत्रादि वेगो को रोकने से; पहले रोगो की चिकित्सा न करने से ;आदि कारणों से पॉच प्रकार के ह्रदय रोग उत्पन्न होतें हैं। ह्रदय रोग का मूल कारण–शारीरिक मानसिक एवं आगन्तुक कारण ही है।

आधुनिक चिकित्सा प्रणाली रक्त–संचार में कमी धूम्रपान चिंता को मुख्य कारण मानता है। चर्तमान खान–पान भी इसका एक कारण है। दूषित खान–पान से मोटापा बढता है और मोटापें का ह्रदय रोगो पर प्रभाव पडता है।

ह्रदय रोग के प्रकार–1–बातज 2–पित्तज 3–कफज 4–कृमिज 5–त्रिदोषज ह्रदय रोग।

1–बातज ह्रदय रोग–खान–पान में असंयम; शुष्क भोजन अत्यधिक मात्रा में भोजन करना;अधिक शोक व्यायाम उपवास करना; इसके कारण हैं। इस रोग में चीरा लगने जैसा कष्ट होता है। भय लगना; मूर्च्छित होना शरीर का शून्य सा मालूम होना–इस रोग के लक्षण हैं।

2–पित्तज ह्रदय रोग –लवणरस प्रधान; कटुरस वाले पदार्थो का सेवन करना; अत्यधिक क्रोध करना धूप में रहना इसके मुख्य कारण हैं। इसके रोगी को खट्टी डकारें आती हैं; अत्यधिक चक्कर आना पसीना आना; मॅुह सूख जाना इसके लक्षण हैं।

3–कफज ह्रदय रोग –चिकने पदार्थो का सेवन; परिश्रम न करना; अधिक सोना आदि इस रोग के कारण हैं। ऐसे रोगी को भोजन में अरूचि हो जाती है ह्रदय पर बोझ सा महसूस होता है।

4–कृमिज ह्रदय रोग –असंयम एवं खटटे मीठे चिकने तीखे पदार्थो का अत्यधिक सेवन करना इसका मुख्य कारण है। शस्त्र से काटने जैसा असहाय दर्द अनुभव होता है।

5–त्रिदोषज ह्रदय रोग –ऐसे रोगी में कफ बात पित्त तीनों दोषों कारण एवं लक्षण पायें जातें हैं।यह एक सन्निपातिक रोग है असमय हार्ड–अटैक की स्थिति बन जाती है। ह्रदय का वाल्व फ्यूज हो जाता है। कभी–कभी अकस्मिक मृत्यु भी हो जाती है। भिन्न–भिन्न चिकित्सा पैथियों में भिन्न भिन्न उपचार वतायें हैं जो बहुत महगें हैं जिन पर आम आदमी की पकड नही है परन्तु विभिन्न प्रमाणों से यह सिद्ध हो चुका है कि यज्ञोपचार पैथी कारगर सिद्ध हुई है।

हवन सामग्री–

1–ब्राह्मी 2–अर्जुन की छाल 3–हरड 4–जटामासी 5–तिलपुष्पी

6–रास्ना 7–चित्रक 8–गोरखमुंडी 9–खरैटी की जड 10–कूठ

11–मीठी वच 12–अपामार्ग 13–शालपर्णी 14–दाख 15–अगर 16–अबंर

17–पुनर्नवा 18–कुटकी 19–सोंठ 20–दारूहल्दी 21–पुष्करमूल 22–तगर

विधि–उपरोक्त को कूटपीस कर छान कर दो भागों में लें एक भाग में गौधृत गुड मिला कर नित्य सूर्य गायत्री तथा गायत्री मंत्र की 24–24 आहुतियों से हवन करें। दूसरे भाग वाली औषधि का सेवन रोगी को दिन में दो वार शहद अथवा गौदुग्ध से करायें।

उच्च रक्तचाप–हाई–ब्लड प्रेशर

1–सोठ 2–शरपुंखा 3–कुटकी 4–नागरमोथा 5–अर्जुन की छाल

6–पुष्करमूल 7–ब्राह्मी 8–पुनर्नवा 9–तेजपत्ता 10–तिलपुष्पी

11–कूठ 12–हरड कालमेष 13–कालीमिर्च

विधि–उपरोक्त रहेगी।

निम्नताप–लो–ब्लड प्रेशर

1–शतावर 2–विधारा 3–अश्वगंधा 4–मुलहठी 5–पिप्पलामूल

विधि—उपरोक्त रहेगी परन्तु औषधि सेवन शुद्ध सिलाजीत युक्त धोला हुआ गौ दुग्ध ले अधिक लाभप्रद है। अर्जुन की छाल को पानी अथवा दूध में उवालकर चाय की तरह से पीने से अधिक लाभ होता है।

परिक्षण परिणाम—

इस रोग से ग्रस्त रोगियों को नित्य यज्ञोपचार के साथ साथ नित्य ध्यान साधना 1 धंब्टा तथा नित्य गौशाला में एक धंटा गौ सेवा तथा अनुलोम—विलोम नादयोग प्राणायाम कराया गया। प्रातः गौ मूत्र का सेवन कराया और लावारिस बच्चों के मध्य समय व्यतीत करनें का अवसर प्रदान किया। 2 वर्ष के निरन्तर अभ्यास से रोगियों को 90 प्रतिशत लाभ हुआ।

साक्ष्य स्रोत

यज्ञ और मानवता पर किये गए प्रयोगों में लाभान्वित परिजनों के साक्षात्कार

प्रथम साक्षात्कार

शोधार्थी– आपका क्या नाम है ? कहॉ रहतें हो ?

व्यक्ति–मेरा नाम रामकुमार माहेश्वरी है। मैं ऑवला बरेली उ0प्र0 में रहता हूॅ।

शोधार्थी–आपकी क्या समस्या थी ?

व्यक्ति–मैं मानसिक पीडा से ग्रस्त था मुझे तनाव रहता था। नीद नही आती थी बुरे बुरे विचार मन में आतें थे।

शोधार्थी–क्या उपचार कराया गया ?

व्यक्ति–मुझे नित्य यज्ञ सत्संग भजन योग प्रणायाम की क्रियाऍ कराई गई। समय समय पर गौशाला ले जाकर गौ सेवा की और मनुष्यो के मध्य रह कर उनसे बातचीत कर धुल मिलनें अपनी बात कहनें की प्रेरणा दी गई।

शोधार्थी–कितनें समय में आप ठीक हो गए ?

व्यक्ति–लगभग 2 वर्ष में मैं पूर्णतयः ठीक हो गया।

शोधार्थी–अव कैसा अनुभव करतें हैं ?

व्यक्ति–मैं पूर्ण स्वस्थ हूॅ नित्य यज्ञ और मानव सेवा के मानवता पूर्ण कार्य करता हूॅ लोगों के मध्य जाकर उन्हें श्रेष्ठ कर्म करनें की प्रेरणा देता हूॅ मुझें आत्मिक शान्ति का अनुभव होता है।

द्वितीय साक्षात्कार

शोधार्थी– आपका क्या नाम है और कहॉ रहतें हैं ?

परिजन–मेरा नाम रेखा है मैं निर्माणा हरियाणा में रहती हूॅ।

शोधार्थी–क्या समस्या थी ?

परिजन–मेरे धर में अशान्ति बीमारी कलह का वातावरण था हम सभी रोग ग्रस्त थे।

शोधार्थी– क्या उपचार कराया गया।

परिजन–नित्य सावुत चावल गुड देशी धी से हवन कराया गया। प्रातः काल नित्य 30 मिनट योग प्राणायाम तथा शाम को 30 मिनट गौ सेवा और नित्य 2 व्यक्तियों से सम्पर्क करनें को कहा गया।

शेधार्थी–कितने समय तक आपने यह नियम किया ?

परिजन–लगभग 2 वर्ष तक

शोधार्थी– क्या परिणाम हुआ ?

परिजन– मैं बिलकुल ठीक हूॅ परिवार में भी आनन्द है।

तृतीय साक्षात्कार

शोधार्थी–आपका क्या नाम है और कहॉ रहतें हो ?

व्यक्ति–मेरा नाम रवि गुप्ता है मैं मिर्जापुर जिला फरूखाबाद में रहता हूॅ।

शोधार्थी–आपकी क्या समस्या थी ?

व्यक्ति–मैं तनाव ग्रस्त रहता था जिस कारण मेंरा कोई भी कार्य टीक नही था बिजनिश भी फेल था।

शोधार्थी–यह क्या उपचार किया गया ?

व्यक्ति—मैं नित्य प्रातः गायत्री मंत्र का जाप करता और प्रणायाम सत्संग सेवा जैसे कार्य करता था। मानव सेवा जीव—जन्तु की सेवा अपाहिजों की मदद हेतु एक व्यवस्था के अन्तर्गत कार्य किया इस अवधि में आहार व्यवहार पर बहुत ध्यान दिया गया।

शोधार्थी— क्या परिणाम रहा ?

व्यक्ति— लगभग 3 वर्ष के उपचार के वाद आज मैं ठीक हूॅ मानव सेवा कर हा हूॅ मेरा एक नर्सरी स्कूल चल रहा है जहॉ मैं व्यस्त रहता हूॅ और पूर्णतया ठीक हूॅ।

शोधार्थी—मानवता के क्या कार्य करतें हो ?

व्यक्ति—गरीव बच्चों को वस्त्र वितरण करना उनें शिक्षा की व्यवस्था करना अपाहिजों की मदद करना आदि।

शोधार्थी—कैसा अनुभव होता है ?

व्यक्ति—बहुत संतुष्टि मिलती है आन्तरिक प्रसन्नता का अनुभव होता है।

शोधार्थी—आपके अनुसार मानवता क्या है ?

व्यक्ति—गरीवों अपाहिजों की बगैर स्वार्थ के सेवा करना ही मानवता है।

चतुर्थ साक्षात्कार

शोधार्थी—आपका क्या नाम है और कहॉ रहती हो ?

व्यक्ति—मेरा नाम मीनाक्षी गुप्ता है मैं ऑवला बरेली उ0प्र0 में रहती हू।

शोधार्थी—क्या समस्या थी ?

व्यक्ति—मैं शारिरिक मानसिक रोग से ग्रस्त थी रात को नींद नही आती थी बुरे बुरे स्वप्न आतें थे।

शोधार्थी—आपको क्या उपचार दिया गया ?

व्यक्ति–मुझें नित्य गायत्री मंत्र अनुलोम–विलोम भ्रामरी प्राणायाम कराया गया नित्य 30 मिनट ध्यान योग शाम 1 धटं गौ सेवा तथा अपराह्न में गरीव बच्चों के मध्य जाकर सेवा करनें के लिए कहा गया। मैंनें निष्ठा पूर्वक 3 वर्ष यह कार्य किया मुझे आत्मिक शान्ति है और सेवा व मानवता के कार्य आज भी करती हॅं।

शोधार्थी–आपके अनुसार मानवता क्या है ?

व्यक्ति–परमार्थ परक समस्त कार्य मानवता की श्रेणी में आतें हें जिन्हें करनें आत्मिक शान्ति एवं सुतुष्टि का अनुभव होता है।

शोधार्थी का मत–

अपनें शोध कार्य में मैंने पाया मानवता के कार्य करनें से मानव को तत्काल आत्मिक शान्ति और सुख का अनुभव होता है जव व्यक्ति किसी पीडित व्यक्ति से मिलता है और उसका सुख–दुख की सुनता है दसके जीवन को अनुभव करता है तो उसें अपना दुख छोटा नजर आता है दूसरों को अपनापन देनें से स्वयं को आनन्द आता है। और अपना दुख धीरे धीरें कम होनें लगता है। सेवा परमार्थ परोपकार जैसे कार्य तत्काल सुख और संतुष्टि प्रदान करतें है। मानवता का कोई सीमित दायरा नही है। हर वो कार्य जो मानवहित कल्याण से जुडा है वो मानवता है। मानवता परिभाषित नही किया जा सकता हैं । मानवता व्यक्ति वृक्ष वनस्पति जीव –जन्तु तंन्तु को मानवीय गुण है। जव व्यक्ति अपनें श्रेष्ठ कार्यो को वडा लेता है अर्थात परोपकार के कार्य करनें लगता है जो संत साधक की श्रेणी में आ जाता है उसका हर कार्य दूसरों सुख आनन्द देनें वाला बन जाता है वही विपरीत कोई व्यक्ति समाज विरोधी कार्य करनें लगता है तो उसके अन्दर नकारात्मक उर्जा वढ जाती है उसका आकर्षण खत्म हो जाता है उसके गलत कार्यो की छाप उाके चेहरें पर स्पष्ट नजर आती है।

मैंनें इस विषय पर काफी समय से प्रयोगात्मक कार्य किए हैं परन्तु एक वर्ष मैंनें निरन्तर कार्य किया है जिसके परिणाम सार्थक रहें हैं मैंनें इस शोध को मन से किया है और जो अनुभव किया है वही लिखा है।

निष्कर्ष

यज्ञ से वातावरण शुद्ध होता है हवन–सामग्री में प्रयुक्त औषधियों के प्रभाव के कारण वातावरण में व्याप्त विषाणु नष्ट होतें हैं। हमारें प्राचीन ऋषिगण वैज्ञानिक थे जो जानतें थे कि हवन के द्धारा वातावरण को शुद्ध कर मानव को स्वस्थ बनाया जा सकता है। इसलिए सोलह संस्कारों में हवन की अनिवार्यता है। अलग–अलग अवसर पर अलग अलग प्रकार की औषधि का प्रयोग हवन में होता रहा है। परन्तु खेद आधुनिक युग में हवन को अधिक महत्व नही दिया जाता है। अस्सी के दशक में आम आदमी की धारणा थी कि यज्ञ के धुएॅ से वातावरण दूषित होता है। इस दृष्टिकोण झूठा सिद्ध किया शान्तिकुॅज हरिद्धार ने जिन्होनें वैज्ञानिक उपकरणों एवं शोध निष्कर्षो के आधार पर सिद्ध किया कि यज्ञ का धुआॅ वातावरण को दूषित नही करता बल्कि शुद्ध करता है।

एक शोध में स्पष्ट हुआ हवन के बाद 33 प्रतिशत वैक्ट्रीरिया नष्ट हुए। निरन्तर एक स्थान पर यज्ञ करनें से कुछ ही समय में वहॉ का वातावरण कीटाणुओं से मुक्त हुआ। प्रथम दिवस 38 द्धितीय दिवस 83 तथा लगातार 5 दिन के यज्ञ के बाद 100 प्रतिशत कीटाणु नष्ट होकर वहॉ का वातावरण शुद्ध हुआ।

एक अन्य रिर्पोट में कहा है कि निरन्तर यज्ञ करनें ो वातावरण में व्याप्त बैक्ट्रीरिया 35 से 75 प्रतिशत कीटाणु 39 से 69 प्रतिशत फंगस 79 पैथोजेंस 38 प्रतिशत नष्ट हुयें।

शान्तिकुॅज हरिद्धार के यज्ञ पर हुए शोध में यज्ञ की प्रवलता को नापा गया जिसमें वायुमण्डल में व्याप्त So2 तथा No2 गैस पर अध्ययन किया गया और पाया कि यज्ञ के बाद वायुमण्डल में इन गैसों की प्रबलता कमशः 50 तथा 60 प्रतिशत कम हुई। यह अनुमान लगाया कि निरन्तर यज्ञ से वातावरण पूर्ण रूप से शुद्ध होता है । बिषैली गैसे नष्ट होती हैं।

विवेचना से स्पष्ट है कि यज्ञ से वातावरण शुद्ध श्रेष्ठ पावन बनता है वहॉ के विषाणु नष्ट होकर वहॉ के निवासियों को उत्तम स्वस्थ प्रदान करते हैं। वहॉ के वातावरण में अनुपम आनन्द एवं सुरम्य शान्ति की अनुभूति होती है। जहॉ नित्य यज्ञ होता है वहॉ के लोग स्वस्थ सद्चिन्तन एवं चरित्रवान होतें हैं। सिद्ध पीठ वही स्थन कहलायें जहॉ नित्य यज्ञ एवं सत्संग की व्यवस्था थी अथवा है। आज भी ऐसे कई स्थान हैं जहॉ के वातावरण में एक अलग ही प्रकार सुखानुभूति होती है।

प्राचीनकालं में गुरुकुलों में विद्यार्थियों के चरित्र–निर्माण एवं हर कला में प्रवीणता निपुणता का कारण भी यही था। वहॉ दिनचर्या का प्रारम्भ यज्ञ से ही होता था। और रात्रि तक कठोर परिश्रम के बाद विश्राम ईश–प्रार्थना के साथ सम्पन्न होता था। प्रातः विद्यार्थियों में नवीन उर्जा संचार होता था परन्तु आज का विद्यार्थी सूर्य निकलनें के बाद बिस्तर से उठता है। सव सुविधाओं के होते हुए भी अनुत्साहवान हताश निराश अनुभव करता है क्यो ? इसका कारण है अनियमित दिनचर्या; रहन–सहन; खान–पान; वातावरण एवं उसकी संगत। स्मरण रहे संगत संत एवं सत से वनती है। और यह दोनों यज्ञ से बनतें है। बनते नही है बल्कि बनायें जातें हैं। अतः नित्य यज्ञ अथवा हवन की व्यवस्था होनी चाहिए।

यज्ञ का शिक्षण मानव को मानवता की ओर ले जाता है जहॉ मानव यज्ञ के प्रभाव में आकर स्वयं के विकारों को दूर एक स्वस्थ एवं पवित्र जीवन जीता है और अवगुणों से दूर होकर सकारात्मक उर्जा को धारण कर मानव को उचित–अनुचित का ज्ञान कराता है उसें सेवा करूणा संवेदना के भाव से जोडकर पूर्ण मानव बननें का शिक्षण देता है। मानवता किसी निश्चित दायरें का नाम नही है जितनें कार्य परमार्थ परक लोक हितकारी हो सकतें हैं वे सभी कार्य मानवता की श्रेणी में आतें है।

तार्किक विश्लेषण

यज्ञोपैथी उपचार के परिणामों पर विचार करें तो हम इस निष्कर्ष पर पहुॅचतें हैं कि अन्य चिकित्सा प्रणालियों की अपेक्षा यज्ञोपचार प्रणाली सफल है। इस प्रणाली में प्रारम्भिक बीमारियॉ लधु उपचार से अल्प समय मे ही ठीक हो जाती है परन्तु गम्भीर रोगों में निरन्तर यज्ञोपचार से लाभ अवश्य मिलता है। जहॉ अन्य पैथियॉ बहुत खर्चीली हैं; इस पर रोग निदान की कोई गारन्टी नही है। कभी–कभी एक रोग के उपचार में दूसरा रोग साइड–इफैक्ट के रूप में सामने आता है और शरीर की रोग निरोधक क्षमता भी कम हो जाती है। दवाओं के अति प्रयोग के कारण अनेकों ऐसे गम्भीर रोग उत्पन्न हो जातें हैं जिनका कोई उपचार ही नही होता। जव तक दवायें चलती हैं तभी तक रोगी क्षणिक आराम का अनुभव होता है। रोग भी कम नही होता है शरीर भी अधिक डोज लेने का आदी होता जाता है।

यज्ञोपचार में हमने अनुभव किया कि सभी बीमारियो का कारण मन और उदर संस्थान है यदि इन पर औषधि का सही प्रयोग हो जाये तो मरीज को अद्‌भुत लाभ होता है। आन्तरिक स्तर पर रोगी की दशा सुधरती है नवीन कोशिकाओं का निर्माण होता है। रोग के शरीर से निकल जाने पर सुख और आनन्द की अनुभूति होती हैं। मन उमंगों से भरा रहता है।

गीता में भगवान श्री कृष्ण कहतें हैं–**अपाने जुह्वति प्राणं** अर्थात अपान में प्राण का हवन करो; अपनी वासना को भावना से परिपूर्ण करो; फिर देखो यह भावना ही तुम्हारा रूपान्तरण करेगी। यह भावना तुम्हें अपान की ग्रन्थियों से मुक्त करेगी। इसी बात को महर्षि अष्टावक्र जी कहतें हैं–**अपाने जुह्वति प्राणं प्राणेऽपानं तथापरे।** अर्थात–पहले अपान केन्द्र में प्राण का हवन और फिर अपान के शुद्ध हो जानें के उपरान्त प्राणकेंन्द्र में अपान का हवन।

यदि प्राण और अपान की गति रुद्ध हो जाये; प्राणायाम सिद्ध हो जाये ंतो उस प्रणायाम के प्रकाश से हमारें प्राण और अपान दोनों ही प्रकाश से परिपूर्ण हो सकतें है। वास्तव में प्राण और अपान में बडी गॉठें पड गई हैं। यह गॉठें वासना और भावना की ही हैं और इनके कारण ही अधिकांश व्यक्ति उदर और हृदय रोग से पीडित हैं। इन गॉठों के खोलने का उपाय भगवान श्री कृष्ण बतातें हैं–''वासना और भावना को तुम धो डालो इनकी समिधा बनाकर प्राणयज्ञ में इनकी आहुति दे दो। इससें एक ऐसा परिशोधन और परिष्कार होगा जिससें तुम्हारें अन्दर आध्यात्मिक उर्जा विकसित होगी फिर तुम्हारी भावनाऍ और वासनाऍ सम्पूर्णरूप से दुर्गन्ध से मुक्त हो जायेंगीं और एक ऐसी सुरभि सुगंध तुम्हारें व्यक्तित्व में फूट पडेगी जिससें जीवन एक महोत्सव बन जाएगा।'' यह एक तरह से प्राणयज्ञ है जो हमको परिपूर्णरूप से परिशोधित करता है। इन दोनों की शुद्धि और सिद्धि यज्ञ के सानिध्य में ही होती है।

यज्ञ के सानिध्य में व्यक्ति का तन ही नही वरन् स्वस्थ मन का भी निर्माण होता है। व्यक्ति की सामर्थ्य–शक्ति बढ जाती है। चेहरे पर क्रान्ति एक विचित्र सी चमक आनें लगती है। आत्म–बल वढता है। मन के ढीलेपन पर अंकुश लगता है। कमजोर मन अनेको बीमारियों का धर है। जव व्यक्ति के मन में बैठ जाता है कि मै ठीक नही हो सकता तो उसे कोई दवा ठीक नही कर सकती है। एलोपैथी में केवल नशें की दवा दी जाती है जिनके सेवन से रोगी को नीद आती है मन दिनादिन कमजोर होता जाता है। परन्तु यज्ञोपचार से मन में उत्साह जाग्रत होता है। मन को गति उर्जा चेतना सकारात्मक चिन्तन मिलता हैं जो उसके लिए रोग निरोधक शक्ति का काम करता है।

यज्ञोपैथी पर प्रयोग करतें हुए मुझे 20 वर्ष से अधिक हो गये; असंख्य रोगियों पर हमनें अनेकों प्रयोग कियें हैं जिनके बारें में हम स्पष्ट कह सकतें हैं कि प्रारम्भ में ऐसा लगता है कि उपचार काम नही कर रहा है परन्तु एक समय के बाद बडी तेजी से यज्ञोपचार रामबाण सिद्ध होता है।

यज्ञ के सानिध्य में रखी हर वस्तु पदार्थ अभिमंत्रित हो जाता है उसमें एक नई सकारात्मक उर्जा आ जाती है। यदि मंत्र औषधि प्रयोग ठीक से किया जायें तो निश्चित लाभ होता है। यज्ञ भस्म प्रर्णिता पात्र जल यज्ञ द्वारा निर्मित क्वाथ तेल सभी अद्भुत शक्तिशाली होकर रोगी को अल्प समय में आरोग्य प्रदान करतें हैं।

यज्ञोपैथी में यह जानना अत्यन्त आवश्यक है कि यज्ञ का विज्ञान श्रद्धा विश्वास निष्ठा पवित्रता सादगी का है इसमें अहंवादिता धंमंड क्रोध पक्षपात ईर्ष्या अशान्ति का कोई स्थन नही है यदि कोई इन मर्यादाओं का पालन नही करता है तो वह इस विद्या का अधिकारी नही है। ऐसे व्यक्ति को यज्ञ फलीभूत नही होता है। औषधि के सम्बन्ध में भी यही पात्रता है कि औषधि गली सडी अपवित्र न हो। कीडे–मकोडें युक्त औषधि का प्रयोग बर्जित है।

यज्ञ एवं यज्ञोपचार पर विस्तृत चर्चा में हम समस्त बिन्दु एवं मर्यादानुशासन पर बहुत कुछ कह चुके हैं जिनको यह पुनः कहना उचित नही है परन्तु हमारें अनुभव विभिन्न प्रमाणो से यह सिद्ध है कि यज्ञोपचार एक अतुलनीय पद्धति है। परन्तु हम यहॉ उन प्रसंगों को कहना चाहेगें जिनके द्वारा हमें एक यज्ञोपैथी लिखनें की प्रेरणा मिली।

1–बदायूँ के ग्रामीण क्षेत्रो में कुछ गायत्री परिवार के परिजन रहतें हैं जिनके धर अनेको अद्भुत बीमारियॉ थी लोगो ं का कहना था उनको कोई ठीक नही कर सकता वह यज्ञोपचार से बीमारी हमेशा के लिए ठीक हो गयी और वे आज स्वस्थ है सुखी हैं।

2–बदायूँ के ही एक परिवार में ब्रह्मराक्षस का प्रकोप था वहॉ के निवासी भयग्रस्त थें अनेको तांत्रिक अपनी अपनी ताकत लगा चुके थे परन्तु कोई लाभ नही विपरीत समस्या बढती जा रही थी वहॉ यज्ञोपचार द्धारा समस्या निदान हुआ वो परिवार आज हमारा मुरीद है।

3–यज्ञोपचार से ग्रह दशा भी ठीक होती है बिसौली के परिवार का काम काज ठप था अनेकों लोगों के द्धारा वह ठगा जा चुका था पीडित परिवार हर तरह से परेशान था अपनें एक रिश्तेदार के माध्यम से उसका हमारें पास आना हुआ जहॉ यज्ञोपचार के द्धारा उसके सारें कार्य पूर्ण हुूए और सम्पत्ति का भी लाभ हुआ।

4–यज्ञोपचार से गम्भीर बीमारियॉ भी ठीक होती है इसका अनुभव भी हमनें किया कुछ वर्ष पूर्व शाहाजहॉपुर उ0प्र0 के सीएमओ साहव को कैंसर रोग हुआ। एलोपैथी दवा काम नही कर रही थी। बीमारी बढती जा रही थी निराशा भी वढ रही थी। उनकी पत्नी माता की अटूट भक्त थीं; उन्होनें रोग के बारें में हमें बताया हमनें यज्ञोपैथी का प्रयोग 4 माह किया आज पूर्ण से स्वस्थ हैं।

अन्य उपचार पैथी भी यज्ञीय पदार्थ एवं यज्ञ के सानिध्य में अधिक प्रभावी हो जाती हैं मानसिक रोगी; गिरतें बाल एवं नजला के रोगियों को हमने यज्ञ द्धारा गर्म जल मे अमरबेल को उवालकर सिर धोने में प्रयुक्त किया जिसका परिणाम यह हुआ कि निरन्तर औषधि सेवन से रोगियो का अल्प समय में अद्‌भुत लाभ हुआ।

याददास्त बढानें के लिए हमने यज्ञ में सहस्रधारा के बाद का शेष धृत उसमें थोडा शहद अदरक रस मिलाकर दिया अच्छे परिणाम आये। विद्यार्थियों को ''मैमोरीलास'' से छुटकारा मिला।

यज्ञ द्धारा गर्म जल से अमलतास की चार अंगुल की फली को पीसकर देने से रोगी को पेट सम्बन्धी रोगों से छुटकारा मिलता है।

ऐसे बहुत से अनुभव हैं जिनका वर्णन हम इस शोध में कर चुकें हैं। हमने यहॉ वे ही नुस्खें तथा अनुभव लिखें हैं जिन पर हमने वर्षो काम किया है। इस निष्कर्ष के आधार पर हम कह सकतें है कि यज्ञोपैथी प्रमाणित एवं निरापद पद्धति है जिसका निरन्तर उपयोग निश्चित लाभकारी सिद्ध होता है। वशर्ते विधि–विधान ठीक होना चाहिए।

यह भी अटूट सत्य है कि यज्ञ और मानवता का सम्बन्ध वैदिक काल से है सभव है यज्ञ का निर्माण मानवता परोपकार एवं प्रकृति के हित–निमित्त ही किया गया हो जिससे सवका कल्याण हो सके। बगैर भेद–भाव के सभी जन यज्ञ मानवता के गुण धर्म को प्राप्त कर आपस में प्रेम आनन्द और शान्ति से रह सकें। उनमें असमानता का भाव न उत्पन्न हो सके परन्तु कालान्तर में कुछ विधर्मियों के कारण यज्ञ और वैदिक–सनातन संस्कृति को तहस–नहस

किया गया और लम्बे समय तक लोग से यज्ञ से बंचित रहे जिस कारण लोगों का रूझान यज्ञ से नही रहा और समाज में असमानता अनीति पाखण्ड अनाचार अत्याचार फैला मानव को मानव से धर्म और जाति के नाम पर अलग किया गया। क्षेत्रवाद धार्मिक संकीर्णता के कारण मानवता को हानि पहुॅची। स्वार्थ वढा–परमार्थ परोपकार का दायरा सिमटनें लगा और वर्तमान समय में आधुनिक पीढी मानवता को महत्व नही देती है जिससें लोग बुढापें में अपनें माता–पिता को बोझ समझतें हैं। अनाथालय वृद्धाश्रम के वढनें का कारण भी यही है। संयुक्त परिवार टूटे जा रहें हैं। हम की भावना खत्म होती जा रही है बच्चों में सेवा संवेदना करूणा भाव लुप्त प्रायः होता जा रहा है। सहनशीलता का अभाव हो रहा है स्वार्थभाव वढ रहा है दिखावा फैशन व्यर्थ खर्चा एवं तीर्थो को विकनिक की तरह से प्रयोग करना आदि बीमारियां बढी हैं।

मोवाइल के बडतें प्रयोग ने अपनों से ही अलग कर दिया है। मशीनों के साथ रहकर मानव मशीन सा हो गया है जहॉ प्रेंम करूणा खत्म सी हो गई है। आज का व्यक्ति इतना निष्ठुर हो गया कि पीडित मानव जीव–जन्तु की बीडियों बनाता रहता है परन्तु बचानें का प्रयास नही करता है। इसलिए वर्तमान समय की आवश्यकता है कि पुनः से यज्ञ और मानवता से सभी को जोडा जाये और इसके लिए यज्ञ ही माध्यम है।

यज्ञ के प्रभाव पर अनेकों शोध कार्य हुए हैं मैंनें स्वयं यज्ञ पर अनेकों वर्ष कार्ष किया है और पाया है जहॉ यज्ञ सत्संग सेवा के कार्य होतें हैं वहॉ आत्मिक शान्ति का अनुभव होता है व्यक्ति को नकारात्मक उर्जा से मुक्ति मिलती है। सेवा कार्यो अथवा मानवता विषयक समस्त कार्यो से संतुष्टि मिलती है। वर्तमान समय में मानव बेचैन दुखी भटका हुआ है जहॉ अनेको पाखण्डी झाड–फूॅक कें नाम पर लोगों को गुमराह कर रहें हैं भूत–प्रेत के नाम पर पशु वली को वढावा दे रहें हैं वही यज्ञ द्धारा नकारात्मक उर्जा को दूर कर सकारात्मक उर्जा द्धारा मानवता का कार्य किया जा रहा है इससें वडी और मानवता हो सकती है जहॉ पाखण्ड अंधविश्वास को विरोध यज्ञ विज्ञान के द्धारा किया जा रहा है। आधुनिक चिकित्सा शास्त्री भी यज्ञ को विज्ञान परक मानतें हैं। यज्ञ कपोल कल्पना मात्र नही है आधुनिक समय में जहॉ पाखण्ड डिजिटल हो गया लोगों कैंसर जैसी बीमारी को जी से ठीक करनें का दावा कर दिया वही यज्ञोपचार ने इस दावें को झूठा सिद्ध किया है और वास्तविक विज्ञान से जोड कर मानवता को पुनीत कार्य किया है। अत' पाखण्ड अंधविश्वास का अंत भी यज्ञ और मानवता के द्धारा संभव है।

शोध–सार मानवता से ओत–प्रोत

धर्म का संबंध आदर्शो एवं सिद्धान्तों से है या वह कोई कपोल–कल्पना निष्ठुर वाक्यावली भर है। धर्म किस सिद्धान्त की बात है वह आपके व्यक्तिगत एकाधिकार के विरूद्ध नही है वह कोई उपचार पद्धति भी नही। वह तो अन्तर्जत की एक महान धटना है एक विशिष्ट गतिविधि है समय एवं काल की बह रही विभिन्न धाराओं में अंतः की विस्मृति न होनें का सुस्वप्न है; धर्म मानवता का प्रिय विषय है परन्तु उसकी समझ उतनी ही दुर्लभ है।

धर्म वास्तविक पूॅजी है मानवता के ज्ञान ग्रहण का सर्वोत्तम बिन्दु है। अनासक्ति और उसके ऊपर प्रकृति की गतिविधियों को देख सकनें की प्रबल दृष्टि है। एक विचार शून्य अवस्था एवं परिष्कृत चितंन है। ऐसा धर्म जिस दिन मानवता के के चरित्र–चितंन का आधार बनेगा मानवता खिल उठेगी उसें विचार बुद्धि से निष्कपट चितंन का आसरा मिलेगा। वह उस दिव्य कमल की भॉति अपना वास्तविक रूप पहचानेगी तभी धर्म की पताका उसका केन्द्रिय एकाधिकार धर्म की वास्तविक पूॅजी उद्धत हो उठेगी एवं मनुष्य चितंन एवं चरित्र से श्रेष्ठ बन सच्चा धर्माधिकारी बनेगा।

जिस दिन मनुष्य धर्म को सही रूप में पहचान लेगा धार्मिक विषय वस्तु उसकी जिह्म पर नही उसके आचरण एवं कल्याण–व्यवहार की अभ्यंगी तथा उसे उत्कर्ष प्रदान करनें वाली होगीं और तभी मनुष्य नवीन रूप में भावी कल्याण की दिशा में बढ चलेगा। यही मानवता का राजमार्ग है तथा मनुष्य के वास्तविक विकास का घोतक है।

यज्ञ और मानवता दोनों एक ही है जब तक मानव जीवन में यज्ञीय भाव अर्थात मानवता नही होगी तब तक वह पाषाण सम है। भले ही मानव वडी–वडी पूजा पाठ साधना करना न जानता हो परन्तु उसके जीवन में परमार्थ–भाव और प्राणी–जगत के लिए करूणा भाव है तो वह संत समान है और ऐसे संतो के कारण ही मानवता जीवित है। वरना वर्तमान समय में लोग केवल जीवों के प्रति दया भाव दिखातें हुए फोटों ही खिचातें है केवल फेसबुक पर डालनें के लिए इसके बाद वास्तविकता के बहुत दूर हो जातें हैं।

धर्म यज्ञ मानवता इनका सम्बन्ध परोपकार–परमार्थ भाव से है। यदि मानव सही मायनें में धार्मिक होगा तो उसका जीवन यज्ञमय अर्थात परोपकार–करूणामय होगा वह दिखावें से कोशो दूर होगा। सादा जीवन उच्च विचार का सिद्धान्त धार्मिकों श्रेष्ठ साधकों का है जो समाज के लिए जिये। जिनका एक–एक पल समोजोत्थान के लिए रहा। जो समाज से केवल जीविकोर्जन हेतु लेतें थे और अपना समस्त धन प्रतिभा श्रम समाज के कल्याण में लगातें थे। ईश्वर चन्द्र विद्यासागर विनोवा भावें दयानन्द सरस्वती विवेकानन्द महात्मा गॉधी पं0 श्रीराम शर्मा आचार्य जी जैसे अनेको संतो–साधको का जीवन उदाहरण है।

यजुर्वेद कहता है–आयुर्यज्ञेन कल्पताम; अर्थात–जीवन को यज्ञमय बनाएॅ। वही जीवन सार्थक है जो परोपकार मय है। संसार की भीड में उन्हीं लोगों की पहचान होती है जो यज्ञमय जीवन जीकर मानवता के कार्य करतें हैं और मानवता के लिए ही जीतें हैं।

प्रस्तुत शोध में यज्ञ का मानवता से सम्बन्ध एवं यज्ञ द्धारा मानवता कैसे संभव है बताया गया है। शोध का उद्देश्य जीवन को यज्ञ और मानवता से ओत'प्रोत बनाना है। वर्तमान परिस्थितियॉ ऐसी है जब प्रथ्वी पर केवल अनाचार अत्याचार आतंकवाद चरित्रहीनता फैली हुई है चारों ओर भयावह वातावरण व्याप्त है। धर्म में पाखण्ड फैल गया है लोग प्रदर्शन को ही धर्म मानतें हैं। नाचनें –गानें और बोलनें को ही धर्म समझतें हैं। वर्तमान समय में इतनें कथावाचक है कि भारत की जनसंख्या को उनसे भाग दिया जाये ंतो एक कथावचक के पीछे मात्र 200 व्यक्ति ही आयेगें परन्तु अफसोस फिर भी स्वार्थ बढ रहा है क्यों क्या कारण है विचार करें–

धार्मिक अनुष्ठान यज्ञ के नाम पर लोगों नें धंधा बना रखा है। आज यज्ञ बहुत महंगा हो गया। इतनें तांत्रिक पैदा हो गये जितनें साधक नही है। जो कार्य बहुत सस्ता अथवाप परोपकार में हो सकता है उसके नाम पर व्यापार खडा कर दिया। यज्ञ को बदनाम कर दिया यही कारण है लोगों की आस्था धर्म और यज्ञ से हटती जा रही है। इसलिए यज्ञ के सम्बन्ध में सारतत्व को निकालना अर्थात वास्तविकता को प्रकट करना अति आवश्यक था। मेरे शोध का प्रमुख कारण यह भी है कि वर्तमान समय में अनेको बीमारियॉ उत्पन्न हो रही है जिन पर आधुनिक विज्ञान की पकड नही है उनकी दवा बनी नही है परन्तु यज्ञ द्धारा उनका निदान संभव है।

बहुत ही कम खर्च में बीमारी का उन्मूलन किया जा सकता है और मानवता को बनायें रखा जा सकता है क्योकि यज्ञ के साथ सेवा सरंक्षण अति आवश्यक है जो मानवता के लक्षण है।

यज्ञोपचार के द्धारा मानवता को और अधिक विकसित मिया जा सकता है जहॉ वर्तमान समय में कोई भी सांसारिक व्यक्ति बगैर स्वार्थ के कोई कार्य नही करता वही नित्य यज्ञ करनें वाला स्वार्थ को कोई महत्व नही देता। बल्कि बह बहुत ही कम साधन–सामग्री में अथवा परोपकार सेवा के भाव से रोगी का रोग निवारण करनें में सफल होता है ऐसे कई प्रमाण है बल्कि मैं स्वयं भी प्रमाण हूॅ जिसनें यज्ञ के द्धारा असंभव कार्यो एवं असाध्य रोगो के निवारण में अनेको उदाहरण प्रस्तुत किए हैं। रोगी के मन में यह भाव आ जाए कि मैं ठीक हो जाऊंगा और वह किसी भी व्यक्ति औषधि अथवा उपवार तथा उपचार करनें वालें पर विश्वास कर ले तो वह निश्चित ठीक हो जाता है आधे से ज्यादा बीमारी दिमाग में ही उत्पन्न होती है और वो सही निर्देशनं से टीक हो जाती हैं। दवा अथवा उपचार साधन मात्र है बैध का विश्वास सेवा करूणा भाव और औषधि का सही प्रयोग एवं रोगी का मनोबल चिकित्सक के प्रति पूर्ण विश्वास रोगी को निरोगी बनानें में सहायक होता है। यज्ञ द्धारा वह वातावरण निर्मित होता जिसमें रोगी नकारात्मक विचारों से मुक्त होकर परमात्म सत्ता पर विश्वास करनें लगता है जहॉ उसका भय तिरोहित हो जाता है और औषधि प्रयोग यज्ञ के द्धारा उपचार रामबाण का कार्य करता है। विशेष औषधि द्धारा किया गये यज्ञ से प्राप्त उर्जा एवं सुगंधि रोगी के शरीर में आरोग्यता प्रदान करती है। रोग के कीटाणुओं को नष्ट कर नयें शैल का निर्माण करती है।

विज्ञान साक्षी है कि कोई वस्तु जलानें पर भी नष्ट नही होती है बल्कि वह वायुभूत होकर आकाश में फैल जाती है। लाल मिर्च जलानें पर वायु में मिलकर दूर दूर तक फैलकर लोगों को खॉसी तथा छींक लानें का कारण बनती है इसी प्रकार से यज्ञ में हवन की गई औषधियॉ तथा धृत आदि पौष्टिक वायुभूत होकर आकाश में अनेक गुना शक्तिशाली होकर फैलतें हैं। जिससे कम खर्च में असंख्य लोगों को शारीरिक–मानसिक लाभ होता है। महामारियो और बीमारियों की संभावना नष्ट हो जाती है। फैलें हुए सामायिक रोग दनससे दूर हो जातें हैं–नष्ट हो जातें हैं। कोरोना काल में हमनें यज्ञ के प्रयोग से असंख्य लोगों को रोग मुक्त कर मानवता

को प्रकट किया और जन–कल्याण की भावना को विकसित करनें में सफल प्रयास किया।

स्वाभिमत

यज्ञ और मानवता एक दूसरें के पूरक है यह कहा जायें कि यज्ञ ही मानवता है और मानवता ही यज्ञ है तो अतिशाक्ति नही होगा क्योंकि इस प्रकृति में जो कुछ भी धटित हो रहा है वह यज्ञमय है प्रकृति नित्य यज्ञ कर रही है पृथ्वी में एक बीज बोया जाता है बदलें में असंख्य बीज उत्पन्न होतें हैं। नादियॉ वृक्ष–वन उपवन बाग–बगीचे पर्वत सभी कुछ मानवता के लिए समर्पित है और नित्य यज्ञ कर रहें है स्वयं के लिए कुछ भी नही रखतें मानव कल्याण के लिए सव कुछ अर्पित कर देतें हैं। या आवश्यक नही है कि अग्नि जलाकर ही यज्ञ किया जायें। यदि कोई किसी निराश्रय की मदद करता है अथवा पीडित की सेवा करता है तो यह यज्ञ ही है। यदि किसी ने गरीब की ऑखों के मोतिया बिन्द का आपरेशन कराया तो यह भी यज्ञ–स्तर का कार्य है। मावनता के निमित्त किसें गए सभी कार्य यज्ञ हैं। यह अक्षय यज्ञ है इसका फल अमिट होता है। एक प्रसंग आता है कि –एक समय एक भूखा चाडांल एक ब्राह्मण के पास आया। ब्राह्मण ने अपनें हिस्सें की रोटी उसे दे दी। चांडाल रोटी खाकर संतुष्ट हुउा पानी पी कर कुल्ला कर जला गया। कुछ समय पश्चात वहॉ एक नेवला आया और उस स्थान पर लोटनें लगा; लोटतें ही उसके बाल सोने के हो गए वह कालें से सुनहरा हो गया। किसी के पूछनें पर उसने बताया इस स्थान पर यज्ञ हुआ है और यह उसी का परिणाम है कि मेरा शरीर सुनहरा हो गया। यह मानवता का ही परिणाम है जो असंभव को भी संभव कर सकता है। जो कार्य पैसें से नही हो सकता है वहॉ सेवा परमार्थ समर्पण संरक्षण से सभव है। हमनें मात्र कर्मकाण्ड को ही सवकुछ समझ लिया है उसके तत्वज्ञान को रहस्य को नही जाना है। इस कारण इस कलयुग मे पूजा–पाठ का सम्पूर्ण लाभ नही ले पातें हैं।

मेरी दृष्टि में परमार्थ–परोपकार एवं मानवता का सर्वाधिक कार्य नारी जाति ही करती है जो बगैर किसी स्वार्थ के अपनें परिवार का शिशु का पोषण करती है

अपनें माता–पिता को छोडकर आती है बगैर किसी वेतन के दिन–रात सेवा करती है ; अपनें परिवार के विकास पोषण के लिए चितिंत रहती है। ऐसी मानवता की मूर्ति साक्षात प्रमाण है।

अध्यात्म का मतलब होता है–प्रेम आत्मीयता। और यह दोनों ही मानवता के आधार हैं। जिस अध्यात्म में यह दोनों नही हैं–वह निष्प्राण है। परन्तु यह भी सत्य है जिस मानवता में अध्यात्म नही है वह दिखावा मात्र है। मानवता मन का वास्तविक लक्षण और प्राणी जगत की आवश्यकता है। यह समस्त संसार मानवता पर ही टिका है यदि मानवता को हटा दिया जाये ंतो समस्त क्रियायें निष्प्रभावी हो जायेगीं।

इसलिए अध्यात्म शास्त्रों में मानवता को यज्ञ कहकर सम्बोधित किया गया है और समस्त मानवों को आपस में मिलजुल कर रहनें तथा सहयोग करनें की प्रेरणा दी गयी है। मैनें इस शोध में गहन अध्ययन कर यज्ञ द्धारा मानवता को कैसे अधिक प्रभावी बनाया जा सकता है और औषधियों का मानव जीवन और उनकी बीमारियों पर उनके प्रभाव को तर्क सहित प्रस्तुत किया है।

वर्तमान समय में वातावरण बहुत दूषित हो गया है वैचारिक अपवित्रता चारित्रिक गिरावट आतंकवाद जाति लिग भेदभाव आर्थिक पतन नवयुवाओं का आलस्यपन एवं उनमें निरसता नशा–प्रवृति चरित्र–दुर्वलता जैसी अनेकों बीमारियॉ पनप रही हैं। आज का युवा अच्छा साहित्य नही पढता; धर्मिक गतिविधियों में भाग नही लेता; माता–पिता बडों का सम्मान नही करता; वहु–बेटियों के प्रति पवित्र दृष्टिकोण नही रखता और अपनें समय का दुर्पोयोग करता है मोबाइल म अधिकाधिकें समय व्यतीत करता है। मशीनों के साथ रहकर मानव मशीन हो गया इयी कारण आत्मिक सम्बन्ध और धार्मिकता लुप्त प्रायः हो गयी जिस कारण मानवता उनसे प्रथक सी होती जा रही है। आवश्यकता है पहलें वातावरण को ठीक किया जायें और यह कार्य यज्ञ द्धारा ही संभव है।

यज्ञ के साथ तीन मर्यादायें जुडी हैं–1–आहार 2–व्यवहार 3–विचार। आहर का सम्बन्ध व्यवहार से है और व्यवहार का सम्बन्ध विचार से है जो जैसा अन्न खाता है उसका चितंन चरित्र वैसा ही बनता है। जैसा खाओगें अन्न। वैसा बनेगा मन–यह सिद्धान्त अटूट है। मासाहारी का व्यवहार क्रूर होता है शराब पीनें बालें से शान्ति सम्मान की कल्पना नही की जा सकती है। इसलिए दूषित भोजन करनें वालें

समाज में दूषित वातावरण बनातें हैं। उनसें मानवता की कल्पना नही की जा सकती। शाकाहारी भोजन करनें वाला साधक स्तर का जीवन जीनें वाला आत्मवत् सर्वभूतेषु की भावना से कार्य करता है। इतिहास साक्षी है परोपकार दया करूणा त्याग के कार्य संत स्तर के व्यक्तियों द्धारा ही संभव हुए हैं। मानवता के जितनें उदाहरण देखें तो पायेगें उन सवमें उचित मन और अन्न वालें व्यक्ति ही परोपकार की भावना से ओत–प्रोत हैं। आतंकबाद चरित्र–हीनता अन्याय दयाहीनता पशुबध और नारी–शोषण करनें वालें व्यक्तियों का आहर दूषित व्यवहार निष्कृष्ट और विचार अपवित्र होतें हैं।

वर्तमान समय में मानव का चिंतन और चरित्र दूषित हो गया जिस कारण परमार्थ–परोपकार की भावना लुप्त प्रायः होती जा रही है आज परोपकार के कार्य मात्र फोटों खिचानें के लिए प्रदर्शन करनें तक सीमित रह गये। भावना के स्थान पर कामना और स्वार्थ ही पनपा है। लोग तीर्थो में भी नशा और अपवित्र भोजन करतें हैं। अधिक मोबाइल के प्रयोग के कारण अपनों से अलग होतें जा रहें है। अधिकाशं युवा रील बनाने तथा मोबाइल चलाने में अपना कीमती समय बर्बाद करतें है। और अपनी प्रतिभा व शारीरिक शक्ति नष्ट करतें है। यह चिंता का विषय है कि देश की युवा शक्ति गलत दिशा में जाकर अपनी संस्कृति व धर्म से दूर होती जा रहीं हैं। एक षंडयंत्र के तहत उन्हें गलत दिशा में झोंका जा रहा है। भविष्य में यही युवा धर्म विहीन होकर अपनें समाज राष्ट् धर्म के बिरोधी बनकर आतंक का पर्याय बन जायेगें। अपनों का ही रक्त वहाकर विनाश करेंगें–इनमें से मानवता छीनी जा रही है जो देश के विनाश का कारण वनेगी। बगैर मानवता के न विकास संभव है और न ही शान्ति संभव है। न भाई चारा संभव है और न ही विश्व–बधुंत्व की भावना संभव है।

अध्यात्म का मूल तत्व भक्ति है और भक्ति का अर्थ है– प्रेम। प्रेम का स्वरूप है–त्याग। जो त्याग नही कर सकता वह न ही परमात्मा के लिए और न ही विश्वात्मा के लिए प्रेम कर सकता है। त्याग का दूसरा नाम–यज्ञ है और यज्ञ –निस्वार्थ भाव से किया जाता है। जिसे करनें के बाद मानसिक एवं भावानात्मक प्रसन्नता प्राप्त होती है। यदि दाम्पत्य जीवन में प्रेम और त्याग न हो तो गृहस्थ जीवन में अनेकों विकृतियॉ उत्पन्न हो जाती है। बच्चें के मन में कुसंस्कार एवं दुश्वृत्तियॉ पनप जाती हैं कभी कभी पति–पत्नि और उनके बच्चें एक–दूसरे से

पृथक होकर गलत दिशा में चले जातें हैं। भिखारी वाला जीवन जीतें हैं और समाज पर बोझ बन जातें हैं।

हवन में विश्व कल्याण के लिए देवों को प्रसन्न करनें के लिए बहुमूल्य सामग्री होमी जाती है और कहा जाता है ' इदम् न मम्' अर्थात यह मेरा नही है यह विश्व कल्याण के लिए है सभी के लिए है। अपनी उत्तम से उत्तम वस्तुओं शक्तियों और सामर्थ्यो को विश्व कल्याण के लिए लोक सेवा में लगा देना भगवान की दी गई वस्तुओं को विराट पुरूष विश्व मानव के चरणों में अर्पित कर देना –यह विराट अटूट मानवता का परम लक्षण है जिसमें सम्पूर्ण विश्व को ही भगवान मानकर सवका सहयोग करना सवको सम्मान देना और सवकों अपना मानकर उनकी पीडा में साथ रहना–यह सनातन संस्कृति है वैदिक सभ्यता है जहॉ बचपन से ही विभिन्न पर्वो तीज–त्योहारों के माध्यम से ऐसा शिक्षण मिलता जिससें मानवता पोषित होती है और मानवता के गुणों को प्राप्त कर एक बालक श्रेष्ठ मानव बनता है। परन्तु खेद –वर्तमान समय में बच्चों के अन्दर प्रारंभ से ही कट्रता हैमानियत चरित्रहीनता निर्दयिता करूणा हीनता जैसे भाव भरे जा रहें हैं ऐसे बालकों से भविष्य में क्या उम्मीद की जा सकती है । बहुत से धर्म के ठेकेदार ही धर्म के पतन के कारण हैं जिन्होंनें जाति धर्म के नाम पर पाखण्ड की दुकान खोल रखी है जो ऊॅच–नीच के नाम अलगाव भेदभाव पैदा कर रहे है। एक बात अटूट सत्य है मानवता का एक ही धर्म और गुण है वो वह है–परोपकार। जो सवके लिए है जहॉ कोई छोटा–वडा नही है। मानवता जोडती है न की तोडती है। मानवता संतों साधकों विद्धानों श्रेष्ठ जनों और सद्चरित्र वानों का आभूषण है। जिसके अभाव में विश्व बन्धुत्व की कल्पना नही की जा सकती है। मानवता के अभाव में मानव गुणों का क्या महत्व रह जाता है। सही अर्थ में मानवता व्यक्ति का परम गुण ही नही आभूषण ही है और इसके अभाव में मानव पशु समान ही है। यह भी सत्य है कि पशु के अन्दर मानव से अधिक भावनाऍ और प्रेम है यदि उन्हें सही संरक्षण एवं शिक्षण मिल जाये ंतो पशु अपने मालिक के पेट भरनें का साधन बन जातें हैं परन्तु आधुनिक पीडी मोबाइल में समय व्यतीत कर अपनी प्रतिभा को नष्ट कर रही है और असमय बीमारी अनिद्रा धोर कष्ट के दल दल में फसती जा रही है। लोग तरह तरह की बीडियों बनाकर डालतें हैं जिन्हें देखकर आज का युवा वैसा ही वनना चाहता है महगी गाडी फोन कर्ज लेकर लेता है और अपनें शौक पूरें करता है जव कर्ज बढ जाता है तो वह

समय से निकाल नही पाता है व्याज भी वडता जाता है और इस कर्ज से मुक्त न होनें की स्थिति में आत्म हत्या तक कर लेता है। असंख्य उदाहरण ऐसे हैं जिनमें कम उम्र में ही मोवाइल का अनुसरण कर युवाओं ने आत्म हत्या की अथवा किसी गम्भीर धटना को अंजाम दिया। आतंकवादी मनोरोगी साज बिरोधी कार्य करनें वाले युवा आधुनिक युग में अधिक पैदा हुए हैं जिनमें मानवता देखनें को नही मिलती है। मैनें ऐसे बहुत से बीडियों मोवाइल पर ही देखें हैं जिनमें कुत्तें विल्ली को फेकतें हुए रील केवल मनोरंजन के लिए बनाई गई। कल्पना करें इन युवाओं के मस्तिष्क में दया करूणा प्रेम वात्सल्य और जीवों के प्रति प्रेम का भाव है कहीं। ऐसे युवा ही मानवता विहीन होकर राष्ट् बिरोधाी कार्य करतें हैं यदि यही स्थिति रही तो भविष्य में भयंकर परिणाम सामनें आयेगें।

<u>मानवता ह्रास के कारण–</u> चिंतन करें तो पायेगें कि मानवता का दिनोदिन ह्रास ही हुआ है आज से 5 दशक पूर्व मानव सीधा सरल नम्र शालीन शान्त प्रकृति प्रेमी दयावान गुणवान अभिमान से रहित था परन्तु आज सव कुछ विपरीत है। सादा जीवन उच्च विचार के सिद्धानत पर मनुष्य विश्वास करता था उसी के अनुसार उसकी दिनचर्या और जीवन यापन था। दिखावें का कोई स्थान नही था। जैसा दिखता था वैसा ही करता था। आधुनिक परिवर्तन निम्न कारण ही समझ में आतें है।

<u>1–आहार</u>–अर्थात खान–पान। व्यक्ति का खान पान पूरी तरह से बदल गया है। हमारें पूर्वज सादा–शुद्ध भोजन ग्रहण करतें थे। कहावत थी– दाल रोबि खाओं प्रभु के गुण गाओ। उनका भोजन शुद्ध शाकाहारी था जो पौषिष्टकता से भरपूर था लकडी के ईधन से भोजन बनता था। ताजा सव्जी खातें थे आज फ्रीज में रखकर खायी जाती हैं। चाऊमीन बर्मर पीजा बिरयानी चिली पुटेटो आज का अशुद्ध भोजन है जिसमें न ही पौष्टिकता है और न ही शुद्धता। असंख्य भोजन मांसाहारी निर्मित है जिसमें पशुओं से क्रूरता हिंसा मार–काट कर उन्हें तडपा–तडपा कर उनसें मास को तला–जला कर बनाया जाता है ऐसे भोजन खानें वालें से दया भाव अथवा मानवता की कल्पना नही की जा सकती है। तैमूर लंग क्रूर प्रवृत्ति का शासक था उसके जीवन में एक बार दया आई जब एक स्त्री का बच्चा नालें में गिर गया तब उसनें बव्वें की पीठ पर भाला भोक कर उस स्त्री को उठा कर दिया कल्पना करें उस

निर्दयी की दया भी बीुत हानिकारक थी कहावत सही है —जैसा खाओगे अन्न वैसा बनेगा मन।

<u>2—व्यवहार</u>—शुद्ध आहार से शुद्ध व्यवहार बनता है इसलिए मासाहारी की तुलना में शाकाहारी अधिक दयालु करूणावान श्रद्धावान और धार्मिक होतें हैं। एक शोध के अनुसार वन में रहनें वाले नित्य साधना उपासना आराधना करनें वाले और शाकाहार नेनें वाले मानवों आत्मवल मनोवल और शरीरवल अधिक होता है। मासाहारी का बल एक अवस्था तक ही सीमित होता है इसके बाद वह असंख्य रोगों से ग्रस्त हो जाता है। कई मासाहारियों को अकाल मृत्यु का शिकार होतें हुए भी देखा हैं। मासाहार पीडित जीव—जन्तु का कराह—वेदना के फलस्वरूप प्राप्त होता है शोध में पाया है कि तिस स्थान अथवा क्षेत्र में जीव—हत्या अधिक होती है वहॉ अकाल पडता है अतिवृष्टि ओलावृष्टि महामारी भयंकर बीमारी जैसी समस्याएॅ उत्पन्न होती है। वर्तमान में विभिन्न प्रकार की समस्याओं का एक मात्र कारण जीवों के प्रति हिंसा अत्याचार ही है। मानव से मानवता छोड जीभ के स्वाद के कारण जीव हत्या करना शुरू कर दिया आज ऐसा कोई जीव नही है जिसको न खाता हो यहॉ तक की सॉप तक को मनुष्य खा जाता है अभी तक चीन के लोग सभी प्रकार के जीव खानें के लिए सुने जातें थे परन्तु अव भारत में पाश्चात्य संस्कृति के कारण सनातन संस्कृति को आधात हुआ है जो भविष्य के लिए ठीक नही है। जव तक मानव सनातन संस्कृति का संरक्षण पोषण व अनुसरण नही करेगा तव तक मानवता विकसित नही होगी। मानवता के नाम पर तमाशा आज भी हो रहा है और कल भी होगा।

आहार के द्धारा व्यवहार परिवर्तन का सिद्धान्त अटूट है और प्रमाण भी है जिन्होंनें सात्विक भोजन लिया वे साधक समाज सुधारक चिन्तक विचारक स्तर के लोग थे विवेकानन्द दयानन्द सरस्वती रामकृष्ण परमहंस समर्थ गुरू रामदास पं0 श्री राम शर्मा आचार्यजी इसके उदाहरण हैं।

<u>3—विचार—</u> मानवता को प्रभावित करनें वाला तृतीय मुख्य कारक विचार ही हैं। आहार से व्यवहार बनता है और व्यवहार से विचार प्रकट होतें हैं। विचार व्यक्ति के चिन्तन चरित्र का प्रमाण हैं। व्यक्ति की सोच उसके विचारों से ही मिलती है यदि किसी व्यक्ति के बारें में पूर्ण जानकारी चाहिए तो उसके आहार व्यवहार को परखनें

में समय लग सकता है परन्तु उसके विचार तत्काल उसके व्यक्तित्व का दर्शन करा देतें हैं। वनावटी दुनिया में विचार आज भी व्यक्ति का आईना है जिसे नकारा नही जा सकता है। समझदार व्यक्ति विचारों से ही व्यक्ति के भविय की जानकारी प्राप्त कर लेतें हैं।

मानवता के संदर्भ में विचारों को व्यक्ति की अभिरूचि से जोडकर उसके गुणों का मूल्याकंन किया जा सकता है। परमार्थिक विचार निष्काम मानवता को जन्म देतें है परन्तु स्वार्थ की भावना मानवता में दिखावटी पन को प्रकट करती है। जो भाव निष्काम होता है वह परोपकार करनें एवं परोपकार प्राप्त करनें वाले दोनों को आनन्दित करता है। उन दोनों के मध्य प्रेम और मधुरता का पावन सम्बन्ध होता है।

4–स्वार्थ वादिता–आज स्वार्थ वादिता के कारण ही मानव परोपकार हीन होता जा रहा है। जहॉ केवल स्वार्थ सिद्धि की बात होगी स्वयं का अधिकाधिक हित–कल्याण पानें की चहॉ होगी वहॉ मानवता परोपकार की फलाश्रुति अंसंभव है। परोपकार करनें वाले को स्व का अस्तित्व मिटाना ही होता है। सम्पूर्ण पृथ्वी हमारा परिवार है सव की पीडा हमारी पीडा है ऐसा भाव ही परोपकार और मानवता को जन्म देता है। मदर टेरेसा को उनकी करूणा भावना ने सवकी मॉ बना दिया गॉधी जी की भावनाऍ थीं जिनके बल पर सव उनके पीछें चल दिये अपनें–अपनें कार्यभार को छोडकर लोगों सत्याग्रह अन्दोलन में अपनी आहुति दी। यदि गॉधी जी भी स्वार्थ सिद्धि में लगे रहतें निज हित को देखतें तो शायद देश आजाद न हो पाता।

संतो साधको ने तो अपना सर्वस्य ही लोकहित में समर्पित कर दिया ऋर्षि दधिचि ने देवासुर संग्राम में अपनी हड्डियॅा तक दान दे दी।

5–आत्मियता का अभाव– आधुनिक समय में मानव स्वयं के बनायें जाल में स्वयं ही फसता जा रहा है वह लग्जरी धर बनाता है गाडी लेता है बैंक बैलेन्स है परन्तु मन में शान्ति नही है क्यों ? इसका एक ही कारण है मानव स्वय के लिए जिया और दूसरों को भूल गया अपनों के सुख–दुख से दूर होता गया स्वार्थी वाला जीवन जीतें जीते वह इतना अकेला हो गया कि स्वयं कि परछाई भी परायी नगनें लगी। जीवन से दया करूणा प्रेम नदारद हो गया। मानव अपनें सुख के लिए महगा कुत्ता पालता है दसके बीमार हो जानें पर गाडी में बिठाकर ले जाता है और चलती सडक पर छोड कर आ जाता है फिर सुध नही लेता कि इसके बाद उसका क्या

हुआ होगा? स्वार्थ वाला जीवन जीतें जीतें मानव मानवता से इतना दूर हो गया कि परमार्थ परोपकार समर्पण सेवा और सत्कार के मायनें ही भूल गया। फिर ऐसे मानव के जीवन में शान्ति कहॉ ?

जो औरों के हित जीता है औरों के हित मरता है।

उसका प्रत्येंक कर्म रामायण है और गीता है।

अर्थात जिसके मन में दया करूणा प्रेम संवेदना है वही सच्चा मानवता का पुजारी है। मानवता मानव ह्रदय का पावन गुण है जो अपनें अन्दर की आवाज को नही सुन सकते हैं वही इस गुण से बंचित रह जातें है। मानव जीवन का सार परोपकार अर्थात मानवता और जीवन को यज्ञमय बनाकर जीना है।

6–सात्विकता का अभाव–आज का युवा शुद्ध अशुद्ध को ध्यान में नही रखता है इस कारण उसकी बुद्धि शुभ से हटकर अशुभ चिन्तन चरित्र में लगी हुई है और अपनें धर्म से विमुख होकर गलत मार्ग पर चलता जा रहा है। उनका तर्क होता है कि हम नही मानतें हैं। जबकि वास्तविकता यह है कि वे अपनी संस्कृति और संस्कार को जानतें ही नही है। सनातन का प्राण है–सात्विकता। जिस मन में सात्विकता नही है वो मन पाषाण समान है। उसके मन में स्वतः ही कुविचार उत्पन्न होतें रहेगें। वर्तमान समय में युवाओं के भटकनें का एक मात्र कारण दूषित चिन्तन–चरित्र ही है। जिस कारण युवा रचनात्मक नही विध्वांत्मक कार्य करनें संलग्न है। मार–काट अशान्ति हंगामा उसके लिए आमवात है। मानवता उससें कोसो दूर होती जा रही है। ऐसे–ऐसे बीडियों बनाकर फेसबुक पर लोड कियें जातें हैं जिनमें युवाओं की हत्या बेदर्दी से करते दिखाया जाता है। जीवों को वेदर्दी से मारा काटा जाता है। जीनें का अधिकार प्रत्येक जीव को है उसें मारनें का अधिकार किसी को भी नही है परन्तु लोग मारकर यह दलील देतें है कि हमें ऐसा करनें का अधिकार धर्म देता है जबकि यह असत्य ही है। कोई भी धर्म हत्या करनें का अधिकार नही देता है सत्य तो यह है कि जिस धर्म में मानवता परमार्थ का भाव नही है वह धर्म नही हो सकता है। मैनें इस्लाम की एक पुस्तक ' दया और मासाहार' देखी। शाीर्षक पढकर उत्सुकता हुई मैंनें जब उसे पढा तो वडा आश्चर्य हुआ तर्क दिया गया था कि हम जिसे पैदा कर सकतें है उसे मार सकते हैं और उसे मारना नही जीवन मुक्ति देना कहतें है। जीव को कष्टों से छुडा कर दया ही करतें हैं। मुझे

यह तर्क न्याय संगत नही लगा। यह आत्म धाती तर्क हैं जहॉ हम अपनी इच्छा महत्वाकांक्षा को धर्म का चोला पहनाकर प्रस्तुत करतें हैं। लोग धर्म के मर्म को समझ नही पाये परन्तु धर्म को अपनें जैसा बना लिया। आज भी पशुवली अथवा कुर्बानी के नाम पर प्रतिवर्ष जीच हिसां होती है।जहॉ जीव विलख विलख कर रोता है जैसे वह स्वयं को बचानें की गुहार–पुकार कर रहा हो। दूसरें धर्म के अनुयायियों के हस्तक्षेप को लोग धार्मिक उन्माद का नाम देतें हैं ऐसें में मानवता स्वयं आखों के समानें होते देखकर दम तोडती नजर आती है। नास्तिकता का खेल दिनोदिन बढता जा रहा है।

नास्तिकता– सात्विकता के अभाव में नास्तिकता ही बढेगी। जहॉ लोग केवल खानें–पीनें इतरानें–इठलानें को ही जीवन मानेगें। पशु–संस्कृति बढेगी। समाज शास्त्र की परिभाषा है–''एनीमल्स हेव सुसाइटी वट नॉट कल्चर''। संगठन तो पशुओं में भी होता है परन्तु उनमें संस्कृति नही होती है। संस्कृति में अभाव में मानव मानवता से विहीन होकर मौत के तांडाव का खेल रचता चला जायेगा और आनें वाली पीडी को पाश्चात्य संस्कृति में धकेलकर अधोपतन की ओर ले जायेगा। अभी समय है जव मानव स्वयं एवं अपनें परिवार को सनातन संस्कृति से यज्ञीय परम्परा से जोडकर नवीन राष्ट् के निर्माण में अपनी भूमिका सुनिश्चित करे अन्यथा पछताना ही होगा। राष्ट् ही नही वरन् परिवार भी टूटेगें।

पारिवारिक विघटन–परिवार के टूटनें स्थिति में पारिवारिक विघटन तेजी से हुआ है लोग गॉव छोडकर शहरों की ओर पलायन कर गये। अपनों से दूर होने के कारण सभ्यता संस्कृति संस्कार से विमुख हो गये। पहलें सुयुक्त परिवारों में सभी धर के मुखिया का कहना मानतें थे और एक ही चूल्हें का बना खाना एक साथ बैठकर खातें थे जिससें उनमें आपस में प्रेम पनपता था परन्तु वर्तमान समय में अपनों में कलह मुकदमाबाजी दंगें पनप रहें हैं। एक–एक ईट जगह के लिए मुकदमें चल रहें हैं जबकि भगवान राम पिता की आज्ञा मानकर 14 वर्ष के लिए वन गये। भरत जी ने उनके अयोध्या में न होनें की स्थिति में राम की चरण–पादिका रखकर राज्य चलाया था। क्या ऐसा वर्तमान समय में संभव है ?

एक उदाहरण यह भी है कि महाभारत काल में दुर्योधन के पान्डवों को सुई के नोंक के बराबर भूमि न देनें तथा पान्डवों का समस्त राज्यपाठ छीन लेनें के कारण अपनों

में ही युद्ध हुआ। इसका मकूल कारण था सभ्यता संस्कृति और संस्कारों के नष्ट होनें की स्थिति में भगवान श्रीकृष्णजी ने पान्डवों को जगाया कि इससे अनाचार अत्याचार बढेगे। गलत संदेश जायेगा पीडियॉ बिगड जायेगीं और जिनके हाथों में धर्म ध्वजा है वे बदनाम हो जायेगे। इसलिए अधर्म अन्याय को स्वीकार नही करना चाहिए। चेतनावान प्राणी को अनीति अधर्म को बिरोध करना चाहिए जिससें मानवता कमजोर हो ऐसी परम्परा को मिटानें में कोई पाप नही है। बल्कि मानवता धर्म की रक्षा करना पुष्य कार्य है। धर्म नीति कहती है अनीति अधर्म को सहना नही चाहिए धर्म में आयें पाखण्ड और कुरीति का बिरोध करना चाहिए। निष्क्रिय बैठनें वाला बहाने वनानें वाला कायर की भॉति है। यदि भीष्म पितामह जो समर्थ थे उस समय यदि दुर्योधन का बिरोध करते तो द्रोपदी का चीर–हरण न होता। परन्तु यह भी सत्य था कि भीष्म ने दुर्योधन का अनीति पूर्ण अन्न ग्रहण किया था जिस कारण उनकी बुद्धि भी बैसी ही हो गई थी।

अर्थात यह सत्य ही है कि आहार से व्यवहार बनता है और व्यवहार से विचार बनतें हैं। सही आहार सात्विकता उत्पन्न करता है और अशुद्ध भोजन बुद्धि खराव करता है फिर खराव बुद्धि से शुद्ध कार्य की कल्पना नही की जा सकती है। इसलिए यज्ञीय परम्परा में आहार को शुद्ध–परिमार्जित कर ब्रह्मण्ड को सबल श्रेष्ठ बनाया जाता है जिससें सर्वत्र शुभ ही हो और अच्छें विचारों की स्थापना हो गलत विचार विश्व ब्रहमाण्ड नष्ट हो जाये क्योंकि कोई शुभ अथवा अशुभ विचार ब्रह्मण्ड में नष्ट नही होता है बल्कि वह अपनें जैसे प्रकृति के व्यक्तियो अपनी ओर आकर्षित करता है इसी कारण गलत विचार धारा के लोग जल्द ही प्रभावी सक्रिय हो जातें हैं। चूकि वातावरण में शुद्ध विचार आहार अशुद्धि के कारण फैल नही पातें है और वे और अधिक ऊपर की ओर चले जातें हैं। विज्ञान मानता है श्रीकृष्ण जी ने जो गीता उपदेश अर्जुन को दिया था वह आज भी ब्रह्मण्ड में सुरक्षित है उसें आकर्षित करनें की आवश्यकता है संभव है भविष्य में ऐसा संभव हो जाये।

संदर्भ व्याख्या–

प्रस्तुत शोध प्रबन्ध का संदर्भ ''यज्ञ द्धारा रोगोपचार संभव और मानवता'' अर्थ पूर्ण उद्देश्य पूर्ण एवं मौलिक है। वर्तमान परिस्थितियों में यज्ञ द्धारा रोगोपचार कर मानवता को कैसे किया जा सकता है इस पर प्रकाश डाला गया है। जहॉ आज चिकित्सा प्रणाली को महंगा जटिल बना दिया है जन साधारण उसका लाभ नही ले पाता अथवा गरीवी आर्थिक तंगी के कारण असमय मौत का शिकार हो जाता है वही आज भी यज्ञ द्धारा रोगोपचार अधिक प्रभावी है। गम्भीर रोगों में एलोपैथी महगी एवं निष्क्रिय सिद्ध हुई है परन्तु औषधि प्रयोग यज्ञ के माध्यम से अधिक प्रभावशाली हो जाता है आयुर्वेद का प्रभाव बढ जाता है। औषधि में शक्ति मंत्र से आती है और यज्ञ के प्रभाव से कई गुना बढ जाती है जिससें रोगी के अंग–अंग को आरोग्यता मिलती है। यज्ञ के सानिध्य में आनें बाला प्राणी जीव जन्तु तन्तु कोई भी वस्तु व पदार्थ सकारात्मक उर्जा से प्रभावित होता है उसकी नकारात्मक उर्जा नष्ट हो जाती है। असंख्य रोगियों पर कियें गए परिणामों में पाया गया है कि यज्ञ की उर्जा–शक्ति मानव मन तन को बहुत ही सीध्र प्रभावित करती है। निराश रोगी को स्वास्थ लाभ देकर मानवता की बहुत बडी सेवा है। वर्तमान समय में इलाज के नाम पर लूट हो रही है छोटी बीमारी को भी बडा बनाकर मरीज अथवा उसके धर बालों को लूटनें का धंधा चल रहा है। अधिकांश गर्भिणी के डिलीवरी के मामलों में सामान्य डिलीवरी न करके आपरेशन करनें का धंधा बना रखा है जिससें गर्भिणी को कष्ट भी होता है और पैसा भी बर्बाद होता है नवजात शिशु को मशीन में रखकर लूटनें का साजिश व्यक्ति को कर्जदार बना देती है । मानव की मानवता इतनी गिर गई कि उसें असहाय से कमानें में भी लाज नही आती है। सनातन संस्कृति परोपकार की भावना से ओतप्रोत रही है परन्तु पाश्चात्य संस्कृति ने मानव को स्वार्थी बना दिया। आयुर्वेद सुखद प्रसव के कई प्रयोग बताए गयेंह" जिनका हमनें वर्णन किया है। यज्ञ द्धारा हमनें सामान्य डिलीवरी करई है और जिनके 2 बार आपरेशन से सन्तान हुई थी उनकी भी सामान्य डिलीवरी हुई है। यह यज्ञ का प्रभाव है और मानवता का प्रत्यक्ष उदाहरण है।

मनोरोगों में जहॉ एलोपैथी केवल नशें की दवा देकर रोगी को और अधिक रोगी बना देती है वही यज्ञ द्धारा उपचार कर रोबी को मानसिक स्तर पर और अधिक

मजबूत बना दियर जाता है। परिक्षणों में पाया गया है कि यज्ञ के सानिध्य में मानसिक रोगी का मनोवल बढ जाता है। ध्यान साधना द्धारा वह तत्काल स्वस्थ होनें लगता है। जो मनोरोगी एकान्त से डरता था उसें एकान्त प्रिय लगने लगता है। मनोरोगी का समाज के सम्पर्क टूट जाता है वह वैरागी की भॉति समाज से प्रथक रहनें लगता है परन्तु नित्य यज्ञ करनें वाला समाजिक कार्यो में भाग लेनें में परमार्थ के कार्य करनें में अपना सौभाग्य समझता है। वर्ष 2004 से अव तक के हमारें द्धारा कियें गयें विभिन्न परिक्ष्रणों में यह पाया गया है कि यज्ञ द्धारा सभी प्रकार के रोगों का निवारण किया जा सकता है और रोगी कम साधनों में ठीक कर उसको पुनः सामान्य जीवन धारा से जोडा जा सकता है–यह वास्तव में सच्ची मानव सेवा एवं मानवता ही है।

मानवता मानव का ही नही वरन् विश्व प्रकृति का गुण है। सम्पूर्ण प्रकृति–वन उपवन बृक्ष जल वायु आकाश अग्नि मिट्टी अथवा औषधियॉ नित्य यज्ञ कर ही है लोकहित में मानवता के कार्यो में संलग्न हैं। सभी पंचभूत तत्व स्वयं के लिए विश्व कल्याण के लिए ही जीवित है उनका उद्‌देश्य परोपकार ही है। यदि प्रकृति मानवता को छोड दे विश्व त्राहि माम त्राहि माम करेगा। स्वांस के रूप में आक्सीजन प्रकृति की बहुत बडी सेवा ही नही अनुदान–वरदान है। पिछलें दिनों कोरोना काल में आक्सीजन की कमी ने इसका एहसास कराया था परन्तु मानव को इसका अनुभव अभी नही हो रहा है नित्य बृक्ष काटे जा रहें हैं लग्जरी कोठी बंगलें की हवस ने मानव को स्वार्थी बना दिया और मनुष्य अपनें ही पैरों में कुल्हाडी मार का स्वयं को कमजोर कर रहा है। पूर्व काल में नित्य यज्ञ होतें थे जिससे बृक्षों को पोषण मिलता था और प्रकृति को संरक्षण हरा भरापन मिलता है सभी जन सुखी समुन्नत थे कोई रोगी अथवा भोगी नही था परन्तु वर्तमान समय में सवकुछ पलट गया है इस कारण न प्रकृति सुरक्षित है और न ही मानव जन्तु–तन्तु का जीवन। यही स्थिति रही तो मानव को वायु और जल के लिए तडपना पढेगा। भोगवादी स्वार्थी जीवन की उसके विनाश का कारण बनेगा। कोरोना काल में हमने स्वयं यज्ञोपचार कर रोगी को अरोग्यता प्रदान की और वातावरण को परिशोधन–परिमार्जित करनें में अथक भूमिका निभायी। उस समय के अनुभव और रोगियों पर किये गये परिक्षण के आधार पर हम यह शोध कार्य करनें में सक्षम हो

सके। हमारें शोध का आधार व्यक्तिगत एवं विभिन्न साधकों के मत प्रयोग परीक्षण–निरीक्षण ही हैं और गुरूकृपा साधना शक्ति संरक्षण उसकी फलाश्रुति है।

भाषा शैली–

भाषा–

प्रस्तुत शोध प्रबन्ध की भाषा सरल सुवोध संस्कृति निष्ठ ओजपूर्ण है। बृजभाषा एवं अवधि संस्कृत और कही कही उर्दू व अग्रेजी शव्दों का प्रयोग हुआ है। भाषा लय वद्ध है।

शैली– निम्न शैलियों का दर्शन होता है

व्याख्यात्मक–प्रत्येक विषय पर गम्भीर चिन्तन प्रस्तुत किया है।

विश्लेषणात्मक–विस्तार से विषय पर विश्लेषण किया गया है।

आध्यिात्मक–सम्पूर्ण विषय आध्यात्मिक है उदाहरण सहित विवेचन किया गया है।

प्रेरकात्मक–प्रेरक शैली में सभी को जाग्रत करनें वाले विचार प्रस्तुत कियें हैं।

उपदेशात्मक–कही कही उपदेश देनें जैसा भाव है जिससें मानव मन को शान्ति का अनुभव होगा।

प्रश्नोत्तर शैली–साक्षात्कार में कुढ स्थानों पर प्रश्नोत्तर शैली का प्रयोग किया है।

साहित्यिक शैली का समावेश है सभी के लिए रोचक प्रेरणा देनें वाली तथा दिशा निर्देशन करनें वाली है पाठक पढकर बोर नही होगा।

हमारा प्रयास सरल शैली में सवके हित में आपनी बात कहनें का रहा है। जिससें शोध का स्तर अच्छा प्रभावी बना रहे और मानव को कुछ नया प्राप्त हो।

`

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1–गायत्री महा विज्ञान लेखक पं0 श्री राम शर्मा आचार्य प्रकाशक युग निर्माण योजना मथुरा वर्ष 1999

2–यज्ञ चिकित्सा संकलन ब्रह्मवर्चस प्रकाशन शान्तिकुंज हरिद्धार 2012

3–युग निर्माण योजना सम्पादक चैतन्य जी प्रकाशक युगनिर्माण योजना मथुरा

वर्ष 2007

4–अखण्ड ज्योति सम्पादक डॉ0 प्रणव पान्ड्या प्रकाशक युग निर्माण योजना मथुरा उ0प्र0 भारत वर्ष 2008

5–गायत्री जीवन का आधार एवं रोगोपचार लेखक डॉ0 विनीत विद्यार्थी दर्शनशास्त्री प्रकाशक डायमंड पाकेट बुक्स नई दिल्ली वर्ष 2015

6–यज्ञेन; पापैबहुभिर्विमुक्तः'डॉ0 विनीत विद्यार्थी दर्शनशास्त्री प्रकाशक डायमंड पाकेट बुक्स नई दिल्ली वर्ष 2015

7–तंत्र मंत्र यंत्र का इतिहास एवं उसकी उपादेयता लेखक डॉ0 विनीत विद्यार्थी दर्शनशास्त्री प्रकाशक–उद्योग नगर प्रकाशन गाजियाबाद वर्ष 2016

8–होराशास्त्रम् सम्पादक विजय लक्ष्मी गुत्ता प्रकाशक भारतीय बैदिक ज्योतिष संस्थानम् बाराणसी 2007

9–गायत्री दर्शन सम्पादक श्यामवीर सिंह प्रकाशक गायत्री तपोवन मोतीचूर हरिपुर कला देहरादून वर्ष 2017

10–यज्ञोपैथी लेखक डॉ विनीत विद्यार्थी दर्शनशास्त्री प्रकाशक मधुशाला प्रकाशन भरतपुर 2021